



नूतन निष्काम पत्रिका

नूतन निष्काम पत्रिका □ वर्ष-7 □ अंक-1 □ मुम्बई □ जनवरी-2016 □ मूल्य-रु.9/-

ॐ

महर्षि दयानन्द सरस्वती रचित वैदिक ग्रन्थों का प्रदर्शन व विक्रय मेला

दिनांक 24 जनवरी से 31 जनवरी 2016 तक

स्थल: आर्य समाज सान्ताक्रुज

आर्य समाज सान्ताक्रुज

72वाँ वार्षिकोत्सव

28 से 31 जनवरी 2016

दूरभाष

022-26602800, 26602075

“पंचमहायज्ञ पाँच कष्टों को बाटने वाले होते हैं”

खुशहालचन्द्र आर्य

हमारे त्यागी, तपस्वी, विद्वान, ऋषि-मुनियों ने हर व्यक्ति को विशेषकर गृहस्थी को पाँच महायज्ञ नित्य सुचारू रूप से करने का आदेश दिया है। इन पाँच महायज्ञों से अनेकों लाभ तो है ही, पर विशेष लाभ यह है कि ये पाँचों यज्ञ पाँच किस्म के दुःखों व कष्टों को दूर करने वाले भी हैं। यानि इन यज्ञों से दुःखों व कष्टों का निराकरण होता है। वे पाँच महायज्ञ हैं (१) ब्रह्मयज्ञ (२) देवयज्ञ (३) पितृयज्ञ (४) बलिवैश्व देवयज्ञ (५) अतिथियज्ञ और कष्ट है अत्मिक, शरीरिक, पारिवारिक, प्राकृतिक तथा अज्ञान से बढ़ती दूरियाँ। पाँच यज्ञों से पाँच कष्ट कैसे दूर होते हैं उनका संक्षिप्त परिचय यहाँ देते हैं।

(१) **ब्रह्मयज्ञ** : ब्रह्मयज्ञ, आत्मा के दुःखों व कष्टों का निवारण करके, आनन्द की अनुभूति करवाता है। ब्रह्मयज्ञ का तात्पर्य है संध्या उपासना करना तथा वेद आदि धार्मिक पुस्तकों का स्वाध्याय करना। मनुष्य को ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना व उपासना नित्य प्रातः व सायं करनी चाहिए। इससे आत्मा में आये विकार यानि ईर्ष्या, द्वेष, घृणा, हिंसा आदि दोष नष्ट हो जाते हैं और उनकी जगह प्रेम, दया, करुणा, परोपकार की भावना व आनन्द का संचार होता है। ईश्वर की स्तुति, प्रार्थनोपासना का तात्पर्य है, कि हम किसी एक शांत व स्वच्छ स्थान पर मन को सब ओर से हटाकर, एकाग्र चित से अपनी दृष्टि को बाहर से हटाकर अन्दर डालकर पहले तो हम ईश्वर की स्तुति यानि प्रशंसा करें कि हे ईश्वर आप कितने सामर्थ्यवान् हो और किस प्रकार सृष्टि की रचना करके उसका संचालन व संहार भी आप ही करते हो और जीवों को उनके किये अच्छे व बुरे कर्मों का फल भी आप ही अपनी न्याय व्यवस्था से किस प्रकार देते हो यह ध्यान देना चाहिए। फिर अपने पूर्ण सामर्थ्य के बाद जो काम नहीं बनता हो उसकी सफलता पाने के लिए और अधिक सामर्थ्य पाने की ईश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए। फिर उसके पास बैठ कर अपने अवगुणों व दोषों का ध्यान करना चाहिए और ईश्वर के गुणों का स्मरण करते हुए अपने दोषों को छोड़ना और ईश्वर के गुणों को अपने जीवन में उतारने का प्रयत्न करना चाहिए। इस प्रकार मनुष्य ब्रह्म यज्ञ से अपने दुर्गुणों को छोड़ता है और ईश्वर के गुण दया, करुणा व परोपकार की भावना से जुड़ता हुआ अपने जीवन को पवित्र बनाता है। ब्रह्मयज्ञ में संध्या उपासना के साथ-साथ वेदों तथा धार्मिक पुस्तकों का स्वाध्याय करना भी आता है जिससे मनुष्य अपने ज्ञान को बढ़ाता है और वेदों के अनुसार चलकर मोक्ष की तरफ अग्रसर होता है, जो जीव का अन्तिम लक्ष्य है, जिसको पाने के लिए जीव अच्छे धर्म करते हुए मनुष्य योनि में आता है।

(२) **देवयज्ञ** :- यह महायज्ञ मनुष्य के शरीर से सम्बन्ध रखता है। देवयज्ञ का तात्पर्य है, हवन करके सब जड़ देवों को प्रसन्न करना होता है। विश्व में पाँच जड़देवता हैं, जिनके नाम हैं, जल, वायु, अग्नि, पृथ्वी और आकाश। इन पाँचों जड़ देवताओं का अग्नि मुख है। जिस प्रकार हम अपने शरीर को स्वस्थ रखने के लिए मुख से भोजन करते हैं और सारा भोजन का पेट में जाकर रस, रक्त आदि बनकर पूरे शरीर में जाता है और पूरे शरीर की कमियों को पूर्ति करता है, तब मनुष्य स्वस्थ रह पाता है। यही काम यज्ञ का है। वह भी अग्नि में जो घृत, सामग्री व समिधा आदि डाली जाती है। उसकी सुगन्ध अग्नि में डालने से इसका गुण बढ़ जाता है और वह सुगन्ध जल, वायु, अग्नि, पृथ्वी व आकाश में फैल कर सबको सुगन्धित कर देती है जिससे सारा वातावरण शुद्ध और पवित्र हो जाता है। ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ जाती है जो जीव के लिए लाभदायक है। हाईड्रोजन व नाईट्रोजन गैस कम हो जाती है जिससे मनुष्य का शरीर स्वस्थ रहता है यानि शरीर में जो रोग व बिमारियाँ रहती हैं वे दूर हो जाती

है और शरीर स्वस्थ हो जाने से मनुष्य का जीवन सुखी व आनन्दित बन जाता है। इस प्रकार देव यज्ञ से शरीर के कष्ट दूर हो जाते हैं।

(३) **पितृयज्ञ** :- पितृ यज्ञ से परिवार व गृहस्थ सुखी बनता है। जिस घर में पितर जनों का आदर व सम्मान होगा तथा उनकी सभी आवश्यकताएँ पूर्ण होगी तो उनके आशीर्वाद और उनके अनुभवों का लाभ उस परिवार को मिलेगा जिससे वह परिवार भी सुखी बना रहेगा। हमारे पौराणिक भाई मरे हुए हैं का श्राद्ध व तर्पण करते हैं, परन्तु वेद हमें मरे हुए पितरों का श्राद्ध व तर्पण करना नहीं सिखाता बल्कि जीवित माता-पिता व वृद्ध जनों की श्रद्धा पूर्वक सेवा, सुश्रूषा करके उनकी आत्मा को प्रसन्न रखना सिखाता है। जिसको श्राद्ध कहते हैं। अपने स्वभाव व व्यवहार से बड़ों के मन को तृप्त रखना ही तर्पण कहलाता है जो जीवितों का ही कर पाना सम्भव है। मरने के बाद करना एक अन्ध विश्वास ही है।

(४) **बलिवैश्व देव यज्ञ** :- इस यज्ञ से सब जीवों को प्रसन्न रखना है। जो भूखा है उसको भोजन देना, जो प्यासा है उसको जल देना। जो असहाय है उसकी सहायता करना। जो जीव हम पर आश्रित है उसकी रक्षा करना ही बलिवैश्वदेव यज्ञ है। इस यज्ञ में जीव हिंसा का कोई स्थान नहीं है। जब सब जीव प्रसन्न रहेंगे तो प्रकृति भी शान्त रहेगी उसमें किसी प्रकार का प्रकोप नहीं होगा और सब जगह शान्ति बनी रहेगी।

(५) **अतिथि यज्ञ** :- घरों में अज्ञानता से जो वैमनस्य बना रहता है, आपस में वैर-भाव रहता है और परस्पर लड़ते-झगड़ते रहते हैं, अतिथियज्ञ से ये सब समाप्त हो जाते हैं। अतिथि यज्ञ का तात्पर्य यह है कि गृहस्थियों के घरपर साधु, सन्त, संन्यासी, विद्वान, वानप्रस्थी व गुरुकुलों के आचार्यों व ब्रह्मचारियों का आना-जाना बना रहना। जिस गृहस्थ में संन्यासी, वानप्रस्थी व विद्वानों का आदर-सत्कार होगा, उनके घरों में प्रवचन होंगे, उपदेश होंगे तो उस घर में परस्पर का विरोध व कटुता कभीभी नहीं रहेगी कारण परस्पर का विरोध व कटुता अज्ञान से उत्पन्न होती है। जब संन्यासियों और विद्वानों के सद्उपदेश जिस घर में होंगे उस घर से अज्ञानता दूर हो जायेगी और परस्पर का प्रेम व सहृदयता का वातावरण बन जायेगा, तब पति-पत्नी, सास-बहू, भाई-भाई का झगड़ा कभी नहीं होगा और वह घर परस्पर के शुद्ध व्यवहार से स्वर्ग के समान बन जायेगा। इस प्रकार इन पाँच महायज्ञों से ऊपर लिखे इन पाँच दुःखों व कष्टों की निवृत्ति होती है। इसलिए हर व्यक्ति को विशेषकर हर गृहस्थी को अपना जीवन व गृहस्थ को सुखी बनाने के लिए ये पाँच महायज्ञ अवश्य करने चाहिए।

इस लेख को लिखने के भाव मेरे मन में तब जगे जब आर्य समाज बड़ा बाजार का वेद सप्ताह यानि श्रावणी-उपाक्रम जो २३ से २९ अगस्त २०१५ तक मनाया गया था। उसी के प्रथम दिन प्रातः के सत्र में पूज्य आचार्य ब्रह्मदत्त जी का प्रवचन इसी विषय पर हुआ था। वह प्रवचन मुझे बहुत ही अच्छा लगा, इसलिए इस का लाभ अन्य विज्ञ पाठक जन भी उठा सके। इस भावना से प्रेरित हो कर मैंने यह लेख लिखा है। आशा है इसका अधिक से अधिक लाभ पाठक गण उठायेंगे।

C/O. गोविन्दराम आर्य अण्ड सन्स
१८० महात्मा गान्धी रोड, (दो तलाब)
कोलकता-७००००७
फोन : २२१८३८२५

आर्य समाज सांताक्रुज, मुम्बई का मासिक मुखपत्र
वर्ष : ७ अंक १ (जनवरी - २०१६)

- दयानंदाब्द : १९२, विक्रम सम्वत् : २०७३
- सृष्टि सम्वत् : १,९६,०८,५३,११६

प्रबन्ध संपादक : चन्द्रगुप्त आर्य
संपादक : संगीत आर्य
सह संपादक : संदीप आर्य
कार्यकारी संपादक : विनोद कुमार शास्त्री
लालचन्द आर्य, रमेश आर्य,
यशबाला गुप्ता.

विज्ञापन की दरें : शुल्क

- पूरा पृष्ठ : रु. ३,०००/-
- एक प्रति : रु. १/-
- १/२ पृष्ठ : रु. २,०००/-
- वार्षिक : रु. १००/-
- १/४ पृष्ठ : रु. १,५००/-
- आजीवन : रु. १०००/-
- विशेषांक की दरें भिन्न होंगी।

वर्गीकृत विज्ञापन

रु. १०/- प्रति शब्द, न्यूनतम रु. ५००/-

चैक/डीडी/मनी आर्डर आदि 'आर्य समाज सांताक्रुज' के नाम से ही भेजें, मुंबई के बाहर के चैक न भेजें। विज्ञापन सामग्री १० तारीख तक भेजें। 'नूतन निष्काम पत्रिका' का मुद्रण ऑफसेट विधि से होता है।

पता : आर्य समाज सांताक्रुज

(विठ्ठलभाई पटेल मार्ग) लिंकिंग रोड, सांताक्रुज (प.),
मुंबई-५४. फोन : २६६०२८००, २६६०२०७५

अनुक्रमणिका	पृष्ठ सं.
“पंचमहायज्ञ पांच कष्टों को बाटने वाले होते हैं”	२
सम्पादकीय	३
सम्पूर्ण विश्व में शान्ति का एकमात्र उपाय-यज्ञ...	४-६
वेद एवं ज्योतिष सम्मेलन	६
गृह्यसूत्रों की उपादेयता?	७
सार्वजनिक स्थलों पर अश्लील चित्र न हों	८
जीवन को सार्थक बनाएँ	९
सत्यार्थ प्रकाश में अन्तरिक्ष विज्ञान	१०-११
चतुर्वेद शतकम्/विचार का चमत्कार/काशी शास्त्रार्थ	१२
कुछ सवाल-जबाब	१३
इलाज-मैथी दाना	१४
विभिन्न रोगों का यज्ञ द्वारा इलाज	१५
तेरी देखरेख में सतत जीता रहूँ	१६

सम्पादकीय

आओ मिलकर विचार करें

भजन की यह पंक्ति निरन्तर हमें प्रेरणा देती है कि हम संगठन में मिलकर कार्य करें। संगठन सूक्त भी हमें यही प्रेरणा देता है। वस्तुतः आर्य समाज अपनी स्थापना के समय से ही एक क्रान्तिकारी संगठन कहलाता रहा है। स्वाधीनता आन्दोलन, अंधविश्वास निर्मूलन, विधवा विवाह का समर्थन गुरुकुलीय शिक्षा का विकास, अन्तर्जातीय विवाह को मान्यता, जन्मगत वर्ण व्यवस्था को नकारकर गुण-कर्म-स्वभावानुसार वर्ण-व्यवस्था का प्रतिपादन आदि कई समग्र सामाजिक क्रान्ति वाले रचनात्मक आंदोलन आर्य समाज ने किये और इसी रूप में आर्य समाज की प्रतिष्ठा भी है।

अपने इस गौरवमय इतिहास के अनुरूप ही वर्तमान में आर्य समाज को किसी एक रचनात्मक आन्दोलन पर ध्यान केन्द्रित करने की आवश्यकता है। हम दैनिक हवन करते हैं और इस हेतु गाय का घी आवश्यक है। बाजार में जब किसी वस्तु की मांग अचानक बढ़ जाती है तो नकली वस्तु बाजार में अधिक मुनाफे के लिये आती है। गाय के घी के नाम पर यदि कुछ और बेचा जा रहा है तो हमारी भावनायें आहत होती हैं। आज सभी आर्य समाजों को मिलकर महर्षि द्वारा बताये मार्ग पर चलने का संगठित प्रयास करना चाहिए। इसका एक निर्देश महर्षि ने गोकर्णानिधि सभा में दिया है। महर्षि के बताये मार्ग पर चलकर हम गाय के घी के निर्माण और शुद्धता पर ध्यान केन्द्रित करके एक आन्दोलन खड़ा कर सकते हैं। प्रकारान्तर में इससे शुद्ध घी एवं राष्ट्र का सही विकास हो सकेगा जिसका लाभ आने वाली पीढ़ियों को भी मिलेगा। गोधूत के शुद्ध उत्पादन को आन्दोलन का रूप देकर हम राष्ट्र में एक रचनात्मक योगदान दे सकते हैं। और यह कार्य सभी के स्वास्थ्य एवं स्वावलंबन को साकार करने की तरफ एक प्रयास होगा। इस आन्दोलन की सफलता अपने आप में एक याज्ञिक क्रिया है जिसमें जितनी आहुति डाली उतनी ही शुद्धता राष्ट्र के सभी नागरिकों को प्राप्त होगी। इसकी शुरुवात के रूप में वर्तमान में जहां कहीं भी संस्थायें शुद्ध घी का उत्पादन कर रही हैं उनका प्रोत्साहन एवं सम्मान करना चाहिए। इस सूत्र से शुरुवात करके हम एक माहौल बना सकते हैं जो सभी के लिये लाभकारी होगा।

सम्पूर्ण विश्व में शान्ति का एकमात्र उपाय-यज्ञ (हवन)

डॉ. गंगाशरण आर्य

पंचमहायज्ञों में द्वितीय “देवयज्ञ” अर्थात् अग्निहोत्र है इस यज्ञ के माध्यम से सम्पूर्ण सृष्टि में जलवायु के शुद्ध होने पर सभी जीवधारियों का कल्याण होता है संसार में उत्पन्न सभी प्राणी तभी स्वस्थ व सुखी रह सकते हैं जब पृथ्वी, जल, वायु, आकाश ये सारे तत्व प्रदूषित हो चुके हैं अग्नि कीटाणुनाशक है। लू में रोगों के कीटाणु व मच्छर आदि मर जाते हैं ठीक इसी प्रकार अग्नि तत्व पृथ्वी, जल, वायु और आकाश की शुद्धि करता है और शुद्धिकरण करने के लिए उसे सृष्टि के सर्वश्रेष्ठ प्राणी (मनुष्य) के सहयोग की आवश्यकता है जो वह सृष्टि में उत्पन्न पुष्टिकारक, सुगंधित, रोग निवारक, औषधीय गुण युक्त पदार्थों को यज्ञ के माध्यम से अग्नि को समर्पित कर दें तो यज्ञाग्नि समस्त ब्रह्माण्ड के प्रदूषण को मिनटों में दूर कर दे मनुष्य ने टॉनिक तो अनेक बना लिए परन्तु ऐसा टॉनिक जो पेड़, पौधों, पशुओं, पक्षियों आदि सबका कल्याण करे वह केवल और केवल ‘देवयज्ञ’ अर्थात् अग्निहोत्र ही है। यह आप किसी यज्ञ शाला के समीप के पेड़-पौधों का निरीक्षण करके देख सकते हैं।

मानव परमपिता परमात्मा की श्रेष्ठतम एवं प्रियतम कृति है। जिस प्रकार माता-पिता नवजात शिशु के आगमन से पूर्व उसके सभी साजो-सामान व सुविधाओं की तैयारी करते हैं उसी प्रकार ईश्वर ने भी अपने मानवीय पुत्र के सुख के लिए सृष्टि को फल-फूल, मेवे, वनस्पतियों इत्यादि से सुसज्जित किया है और अपनी लाडली संतान इस मनुष्य को नानाविध अनमोल रत्न दिए। किन्तु ईश्वर की यह लाडली संतान आज इस ईश्वर प्रदत्त स्वर्ग वातावरण को नरक बनाने पर तुली है जिसके कारण पर्यावरण एक बड़ी चिन्ता का मुद्दा बन गया है। कहीं जमकर बारिश हो रही है, कहीं आकाश आग उगल रहा है, कहीं सुखा है, कहीं बाढ़ है, कहीं किसान अपनी जमीन पर दो-दो नही तीन-तीन फसल ले रहे हैं, कहीं किसान कर्ज के बोझ से आत्महत्या कर रहे हैं। कितनी ही नदियाँ जो सदा जल से परिपूर्ण रहती थी, या तो वे सूखती जा रही है या गंदे नालों में तब्दील हो रही हैं। जो धरती कभी सोना उगलती थी वह धीरे-धीरे बंजर व ऊसर हो गई है। जिन पहाड़ों पर घरों में पंखे की आवश्यकता भी कभी न पड़ती थी आज वहाँ ऐयर कन्डिक्शन लगाने लगे हैं। शहरों व गावों में तापमान जितनी तेजी से ऊपर चढ़ता है वह सब इस बात का प्रमाण है कि मनुष्य ने जो अपनी ऐन्द्रिक सुख-सुविधा के लिए विकास की अन्धी दौड़ शुरू की है उसमें उसने प्रकृति की पूरी तरह से अनदेखी की है। मनुष्य जाति आज अपने अस्तित्व को खतरे में डाल रही है प्राकृतिक जीवनशैली के विनाश में लगकर मानव नहीं जानता कि जिस विज्ञान के माध्यम से वह विकासोन्मुख होना चाहता है वह प्रकृति को तो प्रभावित करता ही है साथ ही उसके अपने अस्तित्व को भी खतरे में डालता है। मानव के बिना सृष्टि का कोई अर्थ नहीं। जिस प्रकार हमारी माँ हर समय हमारे पालन पोषण के लिए उद्योग करती रहती है, उसी प्रकार ईश्वर प्रदत्त यह ममतामयी प्रकृति माँ भी मानव का कल्याण करने में सदैव तत्पर रहती है। जैसे पुत्र अपनी सांसारिक माँ का भरण-पोषण कर उससे आशीष प्राप्त करता है। उसी प्रकार मानव का इस प्रकृति रूपी माँ के

लिए भी कर्तव्य है। वह प्रकृति से सिर्फ लेता है, देता नहीं। वह पेड़ काटता है, लगाता नहीं। वह जमीन से पानी निकालता है, बारिश के पानी को रोकने का इंतजाम नहीं करता। वह बड़े-बड़े कारखाने लगाता है पर उनसे निकलने वाले रसायनों की ठीक से निकासी का कोई प्रबन्ध नहीं करता। उसका मकसद प्रकृति की कीमत पर ज्यादा से ज्यादा मुनाफा कमाना है जिससे वह अपनी संतान को बहुत बड़ी संख्या में धन तो दे सकेगा, लेकिन वह उसे प्रकृति के कहर से कैसे बचा सकेगा। आने समय में अर्थात् भविष्य में (वर्तमान में जो नींव पर्यावरण की रखी जा रही है के अनुसार) तेजाबी वर्षा होगी, नदियों में जल के स्थान पर मल होगा, मनुष्य को जगह-जगह पर थोड़ी-थोड़ी देर के अंतराल पर आक्सीजन बूथ से आक्सीजन लेनी पड़ेगी। अतः उपरोक्त दुष्परिणामों से अपनी आने वाली संतान को बचाने के लिए क्या हमारा कर्तव्य नहीं है कि हम पेड़ों को काटने से बचाएं, नदियों को गंदा होने से बचाएं। इसलिए यदि हमने प्रकृति से कुछ लिया है तो बदले में उसे कुछ देना भी हमारा ही कर्तव्य है ताकि संसार में रहते हुए हम प्राकृतिक आपदाओं का शिकार न बनें। जब-जब मनुष्य प्रकृति से छेड़छाड़ करता है तब-तब विनाश के कगार पर आ खड़ा होता है। लेकिन हमारा सौभाग्य है कि हमने भारतभूमि पर जन्म लिया, ऐसी पवित्र धरा पर अपनी आँखें खोली जहाँ बालपन से ही हमें हमारे ऋषि-मुनियों ने, महर्षियों ने, पूर्वजों ने संस्कार के माध्यम से ही सही, पर हमें यज्ञों से जोड़ रखा है और यज्ञ के महत्व को समय-समय पर हमें समझाने का प्रयास किया है और हमें बताया जाता है (भले ही हम ध्यान न दें) कि वेद हमारे धर्मग्रन्थ है और हमारे जीवन के उपयोगी ज्ञान-विज्ञान वेदादिशास्त्रों में भरा पड़ा है। हमें उनसे लाभ उठाना चाहिए उनमें छुपे हुए रहस्यों को जानना चाहिए ताकि हमारा ही नहीं संपूर्ण विश्व का कल्याण हो सके। तो यज्ञ कीजिए और देखिए कि किस प्रकार विश्व में (जहाँ आज चारों ओर अशांति का वातावरण है) शांति होती है।

सर्वप्रथम तो यज्ञ के महत्व को समझ लें कि यज्ञ क्यों करने चाहिए। आज से नहीं, सृष्टि के प्रारम्भ से ही अब तक कोई ऐसा देश नहीं है जहाँ यज्ञ को किसी न किसी रूप में न किया जाता हो। भारतीय संस्कृति व सभ्यता और परम्पराओं से तो आप परिचित ही हैं कि यहाँ कोई भी कार्य बिना हवन-यज्ञ के नहीं किया जाता। इसके अलावा यवन देश के तत्त्ववेत्ता ‘प्ल्यूकी’ ने आग को वायुशोधक माना है। चीन, जापान में होम को ‘घोम’ कहते हैं, ईरान के पारसी लोग हवन को भारतीयों की तरह करते आए हैं। वाशिंगटन की अग्निहोत्री युनिवर्सिटी “फाइव फील्ड पाथ” नामक संस्था ने अग्निहोत्री युनिवर्सिटी स्थापित करके अमेरिका जर्मन आदि अनेक पाश्चात्य देशों में यज्ञ के परीक्षण किए हैं। फाईवर फील्ड पाथ अर्थात् यज्ञ, दान, तप, कर्म और स्वाध्याय, यह एकदम वैदिक नाम उन्होंने स्वीकार दिया है। यहाँ तक कि जर्मनी में तो बर्थोल्ड मोनिका जेहले नामक जर्मन विद्वान तो यज्ञ की भस्म को अनेक रूप में चिकित्साार्थ प्रयोग करने का प्रचार

करते हैं। चिल्ली के एण्डी पर्वतों में एक विशिष्ट अग्नि मन्दिर अर्थात् यज्ञशाला तैयार की गई जहाँ सहस्रों व्याधियों से मुक्ति प्राप्त हो चुकी है। वेदों के अनुसार होम चिकित्सा संचार का अति प्राचीन विज्ञान है। अतः हम कह सकते हैं कि यज्ञ एक सार्वभौम सिद्धान्त है जिसे मनुष्य आज भूलता जा रहा है। विज्ञान के शिखर पर पहुँच कर भी इस विज्ञान से अनभिज्ञ है। यज्ञ के महत्व को जानते हुए भी अपने चारों ओर प्रदूषित वातावरण को शुद्ध न किया तो ऐसी जानकारी से क्या लाभ? यज्ञ क्यों करें? व्यर्थ में घी क्यों फूँके? फिर यज्ञों में मंत्र पाठ करने से क्या लाभ? समिधा आदि का प्रयोग क्यों करें? ऐसी बातें इसलिए की जाती हैं क्योंकि हम यज्ञ के महत्व को तो जानते हैं लेकिन उपरोक्त प्रश्नों के उत्तर नहीं जानते। हम अंधेरे से बचना चाहते हैं। हमें पता है बिजली है पर जब तक बल्ब नहीं लगाएँगे, रोशनी कैसी होगी? हम मानसिक शांति चाहते हैं इसलिए ए मानव ! जो कुछ भी आपके पास है उसे परमार्थ में बाँटो अर्थात् यज्ञ करो, यज्ञ के माध्यम से हमारे अन्दर पवित्रता की भावनाएं जन्म लेगीं जिससे हमारे चित्त का पर्यावरण शुद्ध होगा और अशांति दूर होगी। शरीर को स्वस्थ रखने के लिए हमें वायु, जल, अन्न आदि की आवश्यकता होती है और यदि प्रकाश देने वाला सूर्य न हो, शीतलता, अन्न व औषध आदि में जीवन शक्ति डालने वाला, रस भरनेवाला चन्द्रमा न हो, बादल न हो, वर्षा न हो, ऋतुओं की अनुकूलता न हो, वृक्ष न हो, फल-फूल न हो तो हमारा जीवन कैसे चल सकता है। यज्ञ करने से ये शुद्ध होने से हमारा जीवन भी शुद्ध होगा। ये दूषित होंगे तो हमारा शरीर भी अस्वस्था रहेगा जैसे आजकल यज्ञों के अभाव में स्थिति बनती जा रही है। अतः इस यज्ञ के माध्यम से इन जड़ देवताओं को शुद्ध करो। वे (माँ की तरह) तुम्हें शुद्ध व स्वस्थ रहने का आशीष देंगे। शतपथ आदि ब्राह्मण ग्रन्थों के अनुसार- 'स्वर्गकामोयजेत' अर्थात् स्वर्ग की कामना है तो यज्ञ करो। अग्निहोत्र ही सब सुखों की नौका है। साथ ही यह भी ब्राह्मण ग्रन्थों में ही कहा गया है। कि "अग्निर्वै देवतानाम मुखं" सभी जड़ देवताओं का मुख अग्नि है। क्योंकि अग्नि में डाले हुए पदार्थ, पदार्थ विज्ञान के अनुसार कभी नष्ट नहीं होते अपितु रूपान्तरित होकर सूक्ष्म होकर लाखों गुणा शक्तिशाली हो जाते हैं। सूक्ष्म होकर अंतरिक्ष में फैल जाते हैं, व्यापक हो जाते हैं। अंतरिक्ष व द्युलोक में व्याप्त पर्यावरण को भी शुद्ध करने में सक्षम हो जाते हैं। इसलिए यजुर्वेद के २३वें अध्याय के ६२वें मंत्र में कहा गया है कि "अयं यज्ञो भुवनस्थ नाभिः" अर्थात् इस यज्ञ को भुवन की नाभि कहा है। जो पदार्थ अग्नि में डाला जाता है वह अति सूक्ष्म रूप धारण कर कल्याणकारी हो जाता है। उदाहरण स्वरूप चीनी के थोड़े से दानें यदि अग्नि में डाल दिए जाए तो भयंकर रोग टी.बी. के बैक्टीरिया नष्ट हो जाते हैं। इसी प्रकार जायफल, गुल्म, लौंग मिलाकर यज्ञ में सामग्री के रूप में प्रयोग करने से मच्छरों का प्रकोप समाप्त हो जाता है। साथ ही यज्ञ के पश्चात् अग्नि जब कोयलों की आग के समान रह जाए तब उसमें नीम की पत्तियाँ एवं तुलसी के पत्ते डालने पर उनसे जो धुआँ उत्पन्न होगा उससे रोग के विषाणू नष्ट हो जाते हैं। इसी प्रकार मुनक्का, किशमिश आदि फलों को सामग्री में प्रयोग करने से टाईफाइड के कीटाणु ३० मिनट में तथा अन्य रोगों के कीटाणु एक या दो घण्टे में नष्ट हो जाते हैं।

देखिए आजकल, कल कारखानों, मिलों फैक्ट्रियों व वाहनों, रेलों

इत्यादि से निकलने वाली जहरीली गैसों को थोड़े से लाभ के लिए हम सहन कर रहे हैं तो बहुत अधिक लाभ पहुंचाने वाले यज्ञ को क्यों न करें। यज्ञ की पुष्टिकारक गैसों से ९६% हानिकारक कीटाणु नष्ट हो जाते हैं। ऐसा पुना के फर्ग्युसन कॉलेज के जीवाणु शास्त्रियों ने एक प्रयोग करने के बाद पाया, उन्होंने ३६ x २२ x १० घनफुट के एक हाल में एक समय का यज्ञ किया परिणाम स्वरूप ८००० घनफुट वायु में कुत्रिम रूप से तैयार प्रदूषण का ७७.५ प्रतिशत हिस्सा खत्म हो गया। जर्मनी के एक वैज्ञानिक जो केमेस्ट्री, बाँटनी, मेडिसिन, रेडियोलॉजी के ज्ञान तथा जर्मनी विश्वविद्यालय में पढ़ाते भी है ने लिखा है कि "After tested Agnihotra myself if seems that with Agnihotra you have a wonder weapon in our hands" अर्थात् स्वयं अग्निहोत्र का परीक्षण करने बाद मैंने पाया है कि सचमुच अग्निहोत्र के आचरण द्वारा मानो आपके हाथ में एक अदभुत शस्त्र आ जाता है (प्रदूषण के विरुद्ध)। इसी क्रम में वर्षा कराने हेतु भी भारत के कई वेद विज्ञानाचार्य व महानुभावों ने प्रयास किये जो सफल हुए। वृष्टि यज्ञ के सफल परीक्षण कैलीफोर्निया के मिस्टर हैडफिल्ड ने भी किए हैं। वे दावे के साथ कहते हैं कि मैं आकाश से पानी बरसा सकता हूँ लगभग ५०० बार वे इस प्रकार के परीक्षण कर चुके हैं। वे यज्ञानि में ऐसे-ऐसे- पदार्थ डालते हैं जिनसे वाष्प सघन होकर बरसने लगती है। यज्ञ द्वारा पर्यावरण शुद्धि का सबसे बड़ा उदाहरण तो आपने २ दिसम्बर १९८४ के विश्व स्तर के समाचार पत्रों में पढ़ा ही होगा कि भोपाल में स्थित युनिथन कार्बाइड खारखाने से गैस रिसाव की खबर मिलते ही दो परिवार श्री एस.एल. कुशवाहा और श्री. एस. राठौर ने अपने पूरे परिवार सहित यज्ञ करना प्रारम्भ कर दिया जिससे इन दोनों परिवारों पर हानिकारक गैसों का कोई दुष्प्रभाव नहीं पड़ा। अतः सम्पूर्ण विश्व को प्रदूषण मुक्त करने व पर्यावरण संतुलन बनाए रखने, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, आंधी तूफान आदि उपद्रवों की शांति का एकमात्र उपाय यज्ञ ही है। यज्ञ के माध्यम से सारे विश्व के आसुरी विचारों का दमन होगा और सर्वत्र सुख शांति होगी। अतः यज्ञ करना प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है चाहे वह किसी भी प्रान्त, नगर या देश का क्यों न हो। क्योंकि आज जो सर्वत्र अशांति फैली हुई है कहीं न कहीं मनुष्य मात्र ही उसके लिए उत्तरदायी है। जो स्वयं को दोषी नहीं समझते तो एक छोटी सी बात के माध्यम से समझ जाएंगे। धूम्रपान तथा दुर्गन्ध फैलाने के कारण यज्ञ न करने वाला प्रत्येक व्यक्ति प्रकृति रूपी माँ का दोषी है। हमें अपने को दोषमुक्त करना होगा अन्यथा प्रकृति माँ अपना कहर बरसाना नहीं छोड़ेगी और उस कहर से बचने का, स्वयं को दोषमुक्त करने का विश्व शांति में सहयोगी बनने का एकमात्र उपाय यज्ञ है।

यज्ञ का आध्यात्मिक पहलु

यह का उद्देश्य केवल मात्र जलवायु को शुद्ध करना ही होता तो इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु कहीं पर भी यांत्रिक द्वारा अग्नि जलाकर उसमें धृत एवं सामग्री के फेंककर, कर ली जाती। किन्तु यज्ञ का प्रयोजन केवल भौतिक ही नहीं अपितु आध्यात्मिक भी जो कि भौतिक लाभों की अपेक्षा कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। उनका संकेत संक्षिप्त रूप में यहाँ कर रहा हूँ यज्ञ में जिन वेद मन्त्रों से आहुति दी जाती है उनके पूर्व 'ओ३म्' का उच्चारण किया जाता है जिसमें हमें ज्ञात होता है कि समस्त प्राकृतिक पदार्थों का

आदि मूल परमेश्वर है, अर्थात् हमारे पास जो भी धन, बल, विद्या, उन सबका उत्पादक, रक्षक, धारक, स्वामी, परमेश्वर है हम नहीं।

मन्त्र के अंत में प्रयुक्त होने वाला शब्द “स्वाहा” हमें प्रेरणा करता है कि हमेशा सु माने अच्छा आह माने बोले अर्थात् सदा प्रिय बोलो तथा उत्तम वस्तुओं का दान किया करो। जैसे ज्ञान मन में है वैसा ही बोलो। यज्ञ कुण्ड में धी और सामग्री की आहुति डालने पर हर बार एक छोटा सा शब्द अन्त में बोला जाता है “इदम् मम” अर्थात् यह मेरा नहीं है। यह शब्द प्रेरणा करता है कि संसार की कोई भी वस्तु हमारी अपनी नहीं है। बार-बार ऐसा बोलने से सांसारिक वस्तुओं के प्रति हमारा मोह या ममता नष्ट हो जाती है और यह भावना बनती है कि आवश्यकता पड़ने पर अपनी प्रिय से प्रिय वस्तु का त्याग कर दो।

इस प्रकार यज्ञ की प्रत्येक प्रक्रिया हमें संकेत करती है यज्ञानि भी हमें अनेक प्रकार से प्रेरणा देती है। अग्नि के मुख्य रूप से तीन गुण है प्रकाश, ताप और गति। प्रकाश - यज्ञानि हमें संकेत करती है कि प्रकाशित होओ न केवल वस्त्र, पात्र, भवन, धन, वाहन, सम्पत्ति आदि भौतिक पदार्थों से बल्कि सत्य, दया, प्रेम, संयम, त्याग, तप, सेवा, ज्ञान-विज्ञान आदि से अपने अन्तःकारण को प्रकाशित करो। ताप - यज्ञानि हमें प्रेरित करती है कि ताप अर्थात् जलाओ। किसको? अपने अंदर छिपे राग, द्वेष, ईर्ष्या, अहंकार, प्रमाद, मोह आदि कुवासनाओं को ताकि हम सन्मार्ग की ओर अग्रसर होकर सुख की प्राप्ति कर सके। गति - यज्ञानि हमारे में भावना भरती है कि रूको नहीं, चलते रहो, बढ़ते रहो। बाधाएँ आएंगी, कष्ट आएँगे, साथी छूट जाएँगे, असफलता भी मिलेगी फिर भी हताश निराश न होवो, नया उत्साह, नई प्रेरणा नए-नए शुभ संकल्प मन में लेकर उठो और तब तक आगे बढ़ते रहो जब तक आपका संकल्प पूरा न हो और यज्ञ के के अंत में ‘सर्वं वै पूर्णं स्वाहा’ कहकर शेष सब सामग्री धृत अग्नि को समर्पित कर दिया जाता है जो हमें बोध करता है कि संसार में समस्त सम्बंध (जो हमारे वर्तमान में है) एक दिन समाप्त हो जाएँगे और यह शरीर भी हमारा न रहेगा केवल राख शेष रहेगी। अतः सांसारिक मोह का त्याग करो अन्यथा दुःख की प्राप्ति होगी। इस प्रकार संपूर्ण यज्ञ हमें किसी न किसी बात की प्रेरणा देता है और हमारी भावनाएँ, हमारा मानवीय व्यवहार लेने का नहीं बल्कि देने का है ऐसी शिक्षा देता है और सिखाता है कि यदि हम किसी से ले भी तो उसे प्रकृति माँ की तरह अनेक गुणा बढ़ाकर लौटाएँ। जैसे यदि हम एक मुट्ठी भर अनाज बोते हैं तो उसी अनाज को धरती माँ एक गठरी बनाकर लौटा देती है जब एक गठरी भरकर अनाज बोते हैं तो धरती माँ एक बोरी बना कर लौटा देती है। इसलिए अपनी जीवनचर्या में, अपने दैनिक व्यवहार में इस यज्ञ रूपी महान्तम, श्रेष्ठतम कार्य को अपनाएँ तथा अपने परिवार, समाज, राष्ट्र एवं विश्व के समक्ष उत्पन्न ग्लोबल वार्मिंग की समस्या का समाधान कर “सर्वे भवन्तु सुखिनः” की भावना को अपने हृदय में पल्लवितर कर पुरुषार्थी बनें।

यज्ञ के महत्व व अध्यात्मिक पहलू को तो आपने समझ लिया, उसके द्वारा कौन-कौन से लाभ मानव जाति को प्राप्त होते हैं का ज्ञान भी हो गया परन्तु उसे अपने घरों में प्रतिदिन कैसे करना है, बस इतनी झिझक बाकी है। इस झिझक का ज्यादातर उत्तर यही मिळता है कि समय की कमी है और पैसे

का अपव्यय ! लेकिन ऐसा कहने वाले ज्यादातर लोग एक-एक घंटा मोबाईल पर बातें करने में समय बिता देते हैं, गपशप में, व्यर्थ की बातों में, टी.वी. देखने में और कितना समय फिजूल के कार्यों में बर्बाद कर देते हैं जबकि दैनिक यज्ञ करने में केवल १५ मिनट का समय लगता है। क्या ऐसे लोग दिन के २४ घंटों में से १५ मिनट का समय नहीं निकाल सकते? रहीं बात अपव्यय की इनमें से ज्यादातर लोग शराब, सिगरेट, कोल्ड ड्रिंक, जंक फूड, आदि जो कि स्वास्थ्य के लिए हानिकारक सिद्ध होते हैं, में पैसा खर्च करते हैं। अनावश्यक खिलौने व कपड़े चाहे कितने ही मंहगे क्यों ना हो खरीद लेते हैं तो क्या दैनिक यज्ञ में खर्च होने वाले ४० या ५० रुपये का खर्च नहीं कर सकते? जबकि यज्ञ में खर्च होने वाले इस रुपये के बदले आप १५० या २०० रुपये का लाभ प्राप्त कर लेते हैं। बीमारी रहित होकर, शुद्ध भोजन व शुद्ध विचार प्राप्त कर अपना तथा औरों का कल्याण करते हैं ये क्या कम है? ये तो हुआ आपके पैसों का सही उपयोग एक तो आपके पैसे बचे, दूसरा परोपकार किया। लेकिन जो पैसा भी लगा सकते हैं और समय भी दे सकते हैं वे लोग यह सोचकर यज्ञ नहीं करते कि मेरे अकेले के यज्ञ करने से क्या होगा और मैं ही न करूँगा तो क्या फर्क पड़ेगा? इसका संतोषजनक उत्तर यही है कि बंद-बूंद से सागर बनाता है। थोड़ी-थोड़ी भाप के कण विशाल बादलों का निर्माण करते हैं इसलिए यज्ञ को हमें अपने जीवन का अंग बनाना चाहिए तभी हमारा व सम्पूर्ण मानव जाति का कल्याण संभव है।

पता : चरित्र निर्माण मंडल, सैनी मोहल्ला,
गाँव-शाहबाद मोहम्मद पुर, नई दिल्ली-११०००६१,
मो. : ९८७१६४४१९५

वेद एवं ज्योतिष सम्मेलन

आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के सौजन्य से वैदिक मिशन मुम्बई की ओर से दिनांक २६-२७ मार्च २०१६ को स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता में आर्य समाज सान्ताक्रूज, मुम्बई में वेद एवं वेदांग ज्योतिष विषय पर एक सम्मेलन संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें स्वामी आर्यवेश जी (दिल्ली), स्वामी धर्मानन्द जी (उड़ीसा), स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी (लखनऊ) विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित रहेंगे।

ज्योतिष के गणित और फलित दो भेद माने जाते हैं। फलित ज्योतिष के नाम पर नक्षत्र, ग्रह, उपग्रह, मुहूर्त, जन्मकुंडली, मंगल-मंगली-राहुकेतु शुभाशुभादि को लेकर अनेक प्रकार का पाखण्ड और अन्ध विश्वास फैला हुआ है। इसकी यथार्थता से आर्य जन अवगत हो सके इसी दृष्टि से इस सम्मेलन का आयोजन किया गया है।

कृपया अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित होकर इस कार्यक्रम की शोभा बढ़ाएं।

भवदीय

संदीप आर्य

मंत्री- वैदिक मिशन मुम्बई

मो. ०९९६९०३७८३७

गृह्यसूत्रों की उपादेयता?

उदयन आर्य

वेदों की पठन-पाठन परम्परा का निर्वहन करने के लिए गृह्यसूत्रों की महत्वपूर्ण आवश्यकता है। गृह्य का अर्थ गृहस्थ से सम्बन्धित है अर्थात् गृहस्थ में क्या कर्म करणीय है? क्या अकरणीय हैं? इन सबका विशेष रूप से दिग्दर्शन किया गया है। परन्तु हमें इन्हीं गृह्यसूत्रों का विशेष अध्ययन करने पर कभी-कभी वेद विरुद्ध बातें भी देखने को मिलती हैं। इसके समाधान में शोधार्थी यही कहना चाहेगा कि गृह्यसूत्र में हर बात को प्रमाण रूप में स्वीकार नहीं करना चाहिए। मेरे द्वारा अध्ययन किये जाने पर ऋग्वेदीय गृह्यसूत्रों में कहीं-कहीं पर गृह्यसूत्रकार तत्कालीन परम्परा का केवल मात्र वर्णन करते हैं तथा कहीं-कहीं अन्य आचार्यों के मतों का भी वर्णन करते हैं। जैसे: ऋग्वेदीय गृह्यसूत्र में वपा शब्द का प्रयोग मिलता है। व्याख्याकारों ने यहाँ वपा शब्द का अर्थ पशु की चर्बी किया है। पशु की चर्बी को अग्नि में आहुति करने से वायु, जल और वातावरण में जो प्रदूषण होगा वह यज्ञीय नहीं हो सकता। परन्तु 'वाहवपाम् जातवेदा' इस मन्त्र को समझना जरूरी है। बिना देवता के मन्त्र का अर्थ तर्कसंगत नहीं हो सकता। क्योंकि देवता वर्ण्यविषय होता है। इस मन्त्र का देवता 'जातवेदा' है। इसका अर्थ हुआ जातानि यो वेद अथवा जातानि व एनं विदुः निरुक्तकार की इस व्याख्या के अनुसार ज्ञानी व्यक्ति जातवेदा है। उसके लिए वपा के वहन का निवेदन वेद मन्त्र में किया गया है।

वैदिक पद यौगिक होते हैं। वपा शब्द पाणिनि व्याकरण के अनुसार 'डुवप् बीज सन्ताने' धातु से बनता है तो उप्यते या यया यस्यां वा सा वपा इस दृष्टि कोण से अन्न अथवा खेत का नाम वपा है। अतः इस मन्त्र में वपा शब्द से अन्न का ही ग्रहण करना उचित है। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने इस मन्त्र में वपा का अर्थ भूमि किया है २। जो कि व्याकरण और निरुक्त वेदांगों के अनुकूल है। यज्ञीय पवित्र कर्मकाण्ड के भी अनुकूल है। अतः यहाँ वपा शब्द का अर्थ चर्बी करना कथमपि उचित नहीं हो सकता। आर्च गृह्यसूत्रों में आश्वलायन, सांख्यायन, कौषितकी आते हैं। ध्यातव्य है कि तत्कालीन परम्परा में वपा शब्द का अर्थ चर्बी किया गया है और बहुधा गृह्यसूत्रकार चर्बी अर्थ ही स्वीकार करते हैं। मेरा मानना है कि सूत्रकार केवल मात्र तत्कालीन परम्परा का निर्देशन करते हैं न कि प्रमाणित। जैसे:- अन्य उदाहरण गृह्यसूत्रों में वर्णित है।

जो श्राद्ध की पद्धति है उस पद्धति में कौन-सी पद्धति क्यों की जा रही है। जैसे:- जल पात्र में तिल डालकर ब्राह्मणों के हाथ में देना। उस जल को ब्राह्मण क्या करेंगे? ऐसा कुछ भी उल्लेख नहीं है। गृह्यसूत्रों में कहा गया है कि ब्राह्मणों के कर लेने पर पिण्ड दान करें। प्रश्न है कि पिण्ड क्या है? किस चीज से निर्मित है? पिण्ड का उद्देश्य क्या है? शास्त्रीय परम्परा में पिण्ड शरीर का नाम है। यथा पिण्डे तथा ब्राह्मण्डे' अपने पितरों के आज्ञा में अपने पिण्डों को मनसा, वाचा, कर्मणा, समर्पित कर देना ही वस्तुतः पिण्ड दान है परन्तु यहाँ इस प्रकार का कोई स्पष्टीकरण नहीं किया गया है। इसी प्रसंग में आगे लिखते हैं कि पिण्ड से अवशिष्ट अन्न को ब्राह्मणों को ही दे देना चाहिए। इस वर्णन से सिद्ध होता है कि सूत्रकार पिण्ड का मतलब अन्न से बना हुआ पिण्ड

ऐसा करते हैं।

अब पुनः प्रश्न होता है कि जब पूर्ण भोजन हो चुका हो तब उन पिण्डों को ब्राह्मण कैसे खायेंगे? पिण्ड भी ३, ५, या ७ है तो भोजन से तृप्त ब्राह्मण इन पिण्डों को किस उदर में सेवन करेंगे? इत्यादि उदाहरणों से प्रतीत होता है कि गृह्यसूत्रकार ना तो अपने मन्तव्य का वर्णन कर रहे हैं। अपितु तत्कालीन समाज के परम्पराओं का केवल मात्र वर्णन कर रहे हैं। इसी कारण से बहुत सारी अन्ध परम्पराओं का वर्तमान में भी प्रचलन है और यह सब कहीं न कहीं गृह्यसूत्रों का परिणाम है। अतः गृह्यसूत्रों के अध्ययन करते समय विशेष अवधान देना चाहिए तथा हर बात वेदानुकूल ही होनी चाहिए। क्योंकि वेद स्वतः प्रमाण है तथा अन्य ग्रंथों को वेद के प्रमाण की आवश्यकता पड़ती है।

यदि कोई ग्रंथ वेदानुकूल है तो स्वीकरणीय है अन्यथा स्वीकरणीय नहीं है। जिन महानुभावों को इस प्रकार के लेखों पर आपत्ति होती है उन्हें एक बार अवश्य ही गृह्यसूत्रों को पढ़ लेना चाहिए और अध्ययन करते समय पूर्वाग्रह से ग्रसित नहीं होना चाहिए। मेरा तात्पर्य यह नहीं है कि गृह्यसूत्रों उपयोगी नहीं है परन्तु इनमें अच्छे प्रसंगों का भी वर्णन मिलता है। जैसे यज्ञकर्म के समापन पर ब्राह्मणों को भोजन भी अवश्य कराना चाहिए। इस प्रसंग में लिखते हैं कि ब्राह्मण वाणी रूप वयं श्रुत, शील और चरित्र इन गुणों से युक्त होना चाहिए। शाङ्खायन कहते हैं कि इन सब गुणों में भी श्रुत गुण सर्वातिशायी है। इस गुण का अतिक्रमण नहीं करना चाहिए। यहाँ अत्यन्त स्पष्ट है कि वेद विद्या विद् चरित्र से अतिनिर्मल सुन्दर शीलवान् ब्राह्मणपट वाच्य है ब्राह्मणत्व में जन्म कारण नहीं है। वर्तमानकाल में जाति व्यवस्था के अन्तर्गत ब्राह्मण कुल में उत्पन्न अनधीत व्यक्ति भी जिस तरह से ब्राह्मण पद वाच्य है।

यह शाङ्खायन को स्वीकार नहीं है। जाति व्यवस्था के कारण ब्राह्मणत्व प्राप्त व्यक्ति सामाजिक सौजन्य के कारण नहीं बन सकते। अतः वेद विद् ब्राह्मण ही भोज्य सत्कारी है। इस प्रकार से अन्य उदाहरणों का दिग्दर्शन गृह सूत्र कार वेद विद् को ही ब्राह्मण संज्ञा देते हैं। परन्तु वर्तमान में जिस तरह से जाति व्यवस्था का स्वरूप दिखाई देते हैं वह कहाँ तक उचित है? ऋग्वेदीय गृह सूत्रों में विभिन्न प्रकार के करणीय और अकरणीय कर्मों का निदर्शन मिलता है।

१. वाहवपाम् इति मन्त्रे पशुरेव दृश्यते तस्मात् इह दर्शनात्, गोपशु अजो वा पशु स्यात् (कौषीतकि गृह्यसूत्र ०३/१५/०४)
२. दष्टव्य यजुर्वेद भाष्य महर्षि दयानन्द (अध्याय ३५/२०)
३. वाग्युपवयः श्रुतशील वृत्तानि गुणाः शाङ्खायनगृह्यसूत्र (१/२/२)
४. श्रुतं सर्वानत्येति शाङ्खायनगृह्यसूत्र (१/२/३)
५. न श्रुतमतीयात् शाङ्खायनगृह्यसूत्र (१/२/४)

प्राचार्य- गुरु विरजानन्द संस्कृत महाविद्यालय
गुरुकुल करतारपुर जालन्धर, १४४८०१ (पंजाब)



सार्वजनिक स्थलों पर अश्लील चित्र न हों

डा. अशोक आर्य

आज जो नग्न तथा अर्धनग्न चित्रों का प्रदर्शन हो रहा है, इससे हमारे अविवाहित युवक और युवतियों पर बहुत ही बुरा प्रभाव पड़ रहा है। आज यही चित्र हमारी भावी पीढ़ी का नैतिक पतन कर रहे हैं। उनके नैतिक पतन के साथ उनमें कामुकता निरंतर बढ़ती जा रही है आज के शोशल मीडिया जैसे फेस बुक आदि में तो इस प्रकार के नंगे चित्रों का ही नहीं अपितु कामुकता पूर्ण कृत्यों का भी खुला प्रदर्शन हो रहा है। यह सब हमारी भावी पीढ़ी के नाश का कारण बन रहा है। इन गंदे दृश्यों को देख इस शोशल मीडिया के माध्यम से जो विवाह सम्बन्ध स्थापित हो रहे हैं अधिकांशतया यह सब भी ठगी, लूटपाट, कत्ल आदि का कारण बन रहे हैं। जहाँ इतना कुछ बिगाड़ने वाला हो वहाँ, एक शिक्षक की शिक्षा क्या करेगी? कुछ भी नहीं। यह सब ब्रह्मचर्य की जो भावना वेद ने दी है, यह जो सात्विक जीवन की भावना हमारी प्राचीन गुरुकुल शिक्षा में दी गई है, आज का यह सब कुछ इस भावना के विरुद्ध काम करते हुए इस के नाश का कारण बन रहा है। यह ब्रह्मचर्य के विरुद्ध हो रहा है। ब्रह्मचर्य क्या है?, इस सम्बन्ध में सुश्रुत ने इस प्रकार उपदेश किया है:-

स्मरण कीर्तनं केलिः, प्रेक्षणं गृहभाषणम् ।

संकल्पोध्यवसायश्च, क्रियानिष्पत्तिरेव च ॥

एतान्मैथुनमष्टङ्ग, प्रवदन्ति मनीषिणः

विपरीतं ब्रह्मचर्यम्, एतदेवाष्टलक्षणम् ॥ सुश्रुत

सुश्रुत ने अपने इस श्लोक के माध्यम से आठ प्रकार के मैथुन का वर्णन करते हुए कहा है कि ब्रह्मचारी को अपने ब्रह्मचर्य की रक्षा के लिए इन आठ प्रकार के मैथुनों से बचना चाहिए। जो इन आठ प्रकार के मैथुनों में से किसी भी एक अथवा एक से अधिक के चक्कर में पड़ जाता है, उसका ब्रह्मचर्य निश्चित ही खंडित हो जाता है, बाधित हो जाता है। इस लिए इन मैथुनों से दूर रहना ब्रह्मचारी के लिए आवश्यक है।

ब्रह्मचर्य क्या है? यह व्याख्या तो बहुत विषद् है किन्तु साधारण शब्दों में हम कह सकते हैं जिस बालक को शिक्षार्थ गुरुकुल भेज दिया जाता था, वह विद्यालय में प्रवेश करते ही एक संस्कार से संस्कारित होता था। इस संस्कार का नाम था वेदारम्भ संस्कार। इस के माध्यम से यह बालक यज्ञोपवीत धारण कर शिक्षा प्राप्ति का कार्य, वेद की शिक्षा पाने का कार्य आरम्भ करता था। इस बालक को ही ब्रह्मचारी कहा जाता था। आज के शब्दों में कहें तो हम कह सकते हैं कि वह बालक, जो स्कूल में, विद्यालय में शिक्षा पाने के लिए जाता है, ब्रह्मचारी है।

ऊपर हमने अष्टांग मैथुन का वर्णन किया है। यह आठ प्रकार के मैथुन इस ब्रह्मचारी के नाश का कारण होते हैं। यह आठ मैथुन क्या हैं? इस के उतर में हम कह सकते हैं:-

१) सदा स्त्रियों का स्मरण करते रहना

२) स्त्रियों के साथ कीर्तन करना

३) स्त्रियों के साथ क्रीडा करना

४) स्त्रियों को सकामभाव से देखना

५) स्त्रियों से एकांत में बातचीत अथवा वार्तालाप करना

६) सम्भोग की इच्छा करना

७) एतदर्श निर्णय लेना

८) इस लिए गए निर्णय को क्रियात्मक रूप देना

यह आठ प्रकार के मैथुन सुश्रुत ने बताये हैं। यह मैथुन अधःपतन का, विशेष रूप से ब्रह्मचर्य के, शिक्षार्थी के, विद्यार्थी के अधःपतन का कारण होते हैं। इससे उनकी शक्तियाँ बेकार जाने लगती हैं तथा बुद्धि नष्ट होने लगती है। समय और शक्ति, जो शिक्षा प्राप्ति में लगनी चाहिए थी, वह सब इस बेकार के हानि प्रद कार्यों में नष्ट होने लगती है। वह ब्रह्मचारी नहीं रह पाता वह शिक्षा प्राप्ति के योग्य नहीं रह जाता। इस प्रकार की प्रवृत्तियों में रहने वाला, इस प्रकार के बुरे आचरण वाला व्यक्ति कभी अच्छा विचार अपने मन में लाता ही नहीं। वह सदा बुरा ही सोचता है। इस प्रकार की सोच उससे शिक्षा के क्षेत्र से निरंतर दूर ले जाने का कारण बनती है।

इस के परिणामों को देखते हुए ही वेद ने लड़के तथा लड़कियों कि शिक्षा की अलग व्यवस्था का आदेश दिया है। स्वामी दयानंद सरस्वती तो स्पष्ट कहते हैं कि दोनों की पाठशालाएं अलग अलग हों, पुरुषों की शाळा में पुरुष तथा लड़कियों की पाठशाला में महिलाएं ही शिक्षा दें और दोनों की पाठशालाओं में कम से कम पांच किलोमीटर की दूरी हो।

इस से स्पष्ट होता है कि वेद के आदेशों का अक्षरशः पालन करने वाले हमारे ऋषि दोनों की अलग शिक्षा के पक्षपाती थे। अलग शिक्षा में भी उनकी इच्छा थी कि स्त्रियों की शाला में केवल स्त्रियाँ और पुरुषों की शाला में केवल पुरुष ही शिक्षा देने वाले रहें ताकि बालकों और शिक्षकों के मध्य भी किसी प्रकार की चर्चा उनकी हानि का कारण न बन जावे। दोनों की शाला में दूरी भी इतनी करने को कहा गया है ताकि किसी भी अवस्था में दोनों में किसी प्रकार का मेल-जोल अथवा बातचीत न हो सके। यह सब उनके ब्रह्मचर्य की रक्षा के लिए किया जाता था ताकि उनकी सोच, उनकी शक्ति केवल और केवल शिक्षा प्राप्ति में ही लगे और वह उत्तम से उत्तम शिक्षा प्राप्त कर संसार के कल्याण के लिए आगे आवें।

इस सब से एक अन्य बात जो सामने आती है, वह यह कि सार्वजनिक स्थानों पर इन गंदे चित्रों के प्रदर्शन से ब्रह्मचर्य की अत्यधिक हानि होती है। आते जाते जब इन चित्रों पर दृष्टि पड़ती है तो मन इन के विषय में सोचने लगता है। इस सब का बुरा प्रभाव विद्यार्थी के दिलों पर पड़ता है और उसकी शिक्षा का कार्य रुक जाता है तथा बुरे विचार ही उसके चिंतन का स्थान ले लेते हैं। इस लिए इन चित्रों का प्रदर्शन रोकने से ही उत्तम शिक्षा संभव है।

जीवन को सार्थक बनाएँ

- महात्मा चैतन्यमुनि

पांच महायज्ञों में से एक है 'ब्रह्म-यज्ञ' अर्थात् परमात्मा की उपासना करना। वास्तव में यदि गहराई से चिन्तन करें तो महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा संकलित सन्ध्या में पूरा अष्टांगयोग है। महर्षि दयानन्दजी ने सन्ध्या के मन्त्रों से पूर्व जो शीर्षक दिए हैं वे अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं तथा उनके अनुसार ही अपने चित्त की स्थिति को बनाकर सन्ध्या करें तो हमें उससे निश्चित ही आध्यात्मिक लाभ प्राप्त होगा। मानव जीवन का मुख्य उद्देश्य उपासना द्वारा प्रभु का सान्निध्य प्राप्त करना ही है। इसी में जीवन की सार्थकता है अन्यथा जिसके हृदय में प्रभु के प्रति प्रेम एवं समर्पण की भावना नहीं है वह जीवन तो पशुओं के समान ही है। इस सम्बन्ध में कबीर ने भी बहुत ही सुन्दर कहा है-

जा घट प्रेम न संचरे सो घट जान मसान,
जैसे खाल लुहार की सांस लेतु बिन प्राण ।

जिसके जीवन में प्रभु-भक्ति नहीं वह तो मानों वास्तव में ही मुर्दे के समान है क्योंकि यदि सांसों के आने-जाने को ही जीवन कहें तो वह तो लुहार की खाल भी वायु लेती है और छोड़ती है। इसलिए व्यक्ति को अन्य कार्य गौण और प्रभु-भक्ति मुख्य समझनी चाहिए। अभाग्य से आज इसके विपरीत हो रहा है जिसके कारण यह अनमोल मानव-जीवन अकारण ही चला जा रहा है.... सन्ध्या में जब 'मनसा परिक्रमा' के मन्त्रों पर चिन्तन करने के बाद चित्तवृत्तियाँ प्रभु के ही चिन्तन में समाहित हो जाती हैं तो साधक को 'उपस्थान' की स्थिति प्राप्त होती है। उस समय वह तामसिक, राजसिक और सात्विक इन तीनों गुणों से उपर उठकर जिस स्थिति का साक्षात्कार करता है उसके सम्बन्ध में कहा गया है-

उद्वयं तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम् ।

देवं देवता सूर्यमग्न्यं ज्योतिरुत्तमम्॥ (यजु. ०३५-१४)

अर्थात् वह (तमसः) सत्व, रज और तम रूपी अन्धकारमय प्रकृति से परे हो जाता है, छूट जाता है। उसका सीधा सम्पर्क (उत्तरम्) उत्कृष्ट चेतन जीवात्मा के साथ हो जाता है, उसे प्रसन्नान की स्थिति प्राप्त हो जाती है, वह प्रकृति और पुरुष के भेद को साफ-साफ अनुभव करता है। सत्य और असत्य तथा विद्या और अविद्या के भेद को समग्रतः जानता है। और फिर उससे भी आगे (ज्योतिरुत्तमम्) ज्योति की भी ज्योति उस परमात्मा की अनुभूति को प्राप्त हो जाता है। योग दर्शन के प्रथम पाठ के तीसरे सूत्र में कहा गया है- तदाद्रष्टुः स्वरूपेऽवस्थानम्। वह अपने निज आत्म-स्वरूप में आकर परमात्मा के सान्निध्य को प्राप्त होता है। वास्तव में परमात्मा को कहीं भी खोजने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि वह तो सर्वव्यापक है। साधना तो स्वयं को होता है, अपनी पहचान होने पर ही प्रभु का सान्निध्य स्वतः प्राप्त हो जाता है। व्यक्ति इस इस स्थिति को कैसे प्राप्त करे इसका संकेत अगले मन्त्र में इस प्रकार मिलता है-

इमं जीवेभ्यः परिधिं दधामि मैषां नु गादपरोऽर्थमेतम्।

शतं जीवन्तु शरदः पुरुचीरन्तर्मुत्तुं दधतां पर्वतेना। (यजु. ३५-१५)

इस मन्त्र में जीवन को सार्थकता प्रदान करने के लिए मुख्यतः पांच महत्वपूर्ण सूत्र दिए गए हैं। सबसे पहले तो (इमम् परिधिम्) व्यक्ति को अपना जीवन मर्यादित करना चाहिए अर्थात् वेद एवं आप्तपुरुषों द्वारा

निर्देशित मर्यादाओं का दृढ़ता के साथ अनुपालन करना चाहिए। उसमें किसी प्रकार की भी ढील नहीं देनी चाहिए। यदि हम उपासना के प्रसंग में वेद के इस आदेश को लें तो साधक को सर्वप्रथम यमों का अनुपालन दृढ़तापूर्वक करना अपेक्षित है अन्यथा आगे उपासना में गति कदापि नहीं हो सकती है। यमों की ये मर्यादाएँ ही उसके जीवन को सार्थकता प्रदान कर सकती हैं। यमों का अनुपालन करना ही साधक की उपासना का प्रबल आधार है।

दूसरी बात कही गई है (एतम् अर्थ) सब कोई अपने पुरुषार्थ से ही धनार्जन का विचार करे, कोई किसी दूसरे के धन की कामना आदि न करे... वेद में अन्यत्र भी इसी प्रकार का आदेश दिया गया है कि हमें लोभ के वशीभूत होकर किसी दूसरे के धन की कामना नहीं करनी चाहिए। मनु महाराज तो कहते हैं कि जो अधर्म का सहारा लेकर धन कमाता है वह कभी भी आदर्श जीवन को प्राप्त नहीं हो सकता है। आगे कहा गया- (शरदः शतम्) हम सौ वर्ष तक जीने की कामना करें मगर केवल कामना भर करने से कुछ भी प्राप्त होने वाला नहीं है बल्कि हमारा आचार-व्यवहार और दिनचर्या मर्यादित हो। उत्तम खान-पान, व्यायाम, प्राणायाम आदि के द्वारा अपने शरीर को स्वस्थ बनाना चाहिए। शरीर को कभी भी अवहेलना नहीं करना चाहिए क्यों कि हमारी समस्त क्रियाओं का आधार यह शरीर ही है। हम सौ वर्ष तक जीने की कामना करें मगर कर्म करते हुए... सन्ध्या में भी सौ वर्ष तथा उससे भी अधिक अदीन होकर जीने की कामना की गई है। (पुरुचीः) हमारी प्रत्येक क्रिया हमारे जीवन को पूर्णता देने वाली हो। गीता में बहुत ही सुन्दर बात कही गई है कि हम स्वयं ही अपने मित्र हैं और स्वयं ही अपने शत्रु भी। यदि हम वेदानुसार अपने जीवन को बनाएंगे तो मानों अपने मित्र हैं और वेद के विपरीत कार्य करेंगे तो स्वयं ही अपने शत्रु बन जाएंगे अर्थात् स्वयं ही स्वयं के लिए दुःख एवं क्लेश पैदा कर लेंगे... हमारे कार्य ऐसे होने चाहिए जो हमारा किसी प्रकार से भी विनाश न करें बल्कि सर्वदा विकास ही करें। आगे वेद में और भी उत्तम बात कही गई है- (अन्तः मृत्युम् दधताम्) हम परमात्मा के रूद्र-रूप (न्याय करनेवाले) को तथा मृत्यु को सदा ही स्मरण रखें... हमें इस सिद्धान्त को अपने हृदय में बिठाकर अपना जीवन व्यतीत करना चाहिए कि परमात्मा की न्याय-व्यवस्था में यदि हम अच्छा कर्म करेंगे तो पुरस्कार मिलेगा और यदि बुरा कर्म करेंगे तो दण्ड मिलेगा। किसी नदी का स्नान, कोई गुरु, पीर या पैगम्बर हमें हमारे पाप-कर्मों के दण्ड से मुक्ति नहीं दिला सकता है क्योंकि परमात्मा न्यायकारी है। प्रभु ने हमें कर्म करने में स्वतन्त्र रखा है मगर उस कर्म का फल प्रभु ने अपने हाथ में रखा है। इसलिए प्रभु के उस रूद्र-रूप को सदा ही अपने सामने रखना चाहिए। जैसे प्रभु के रूद्र-रूप को स्मरण रखना है उसी प्रकार मृत्यु को भी सदा स्मरण रखना है। जो व्यक्ति मृत्यु को स्मरण रखता है वह कभी भी पापकर्म नहीं कर सकता है। मृत्यु को स्मरण रखने का यह भाव लिया जाना अति-उत्तम है कि हमें जीवन के जितने भी क्षण मिले हैं इनका उपयोग निरन्तर पुण्य कमाने के लिए कर लें, पता नहीं कब सांसों का आना-जाना समाप्त हो जाए...

सत्यार्थ प्रकाश में अन्तरिक्ष विज्ञान

- सुखदेव व्यास

सत्यार्थ प्रकाश संसार की सर्वोत्तम पुस्तक है। इसमें सभी धर्म, विचार, इतिहास, सृष्टि उत्पत्ति, सत्यधर्म के साथ साथ अनेक विषयों का समीक्षात्मक विवेचन किया है, जबही यह ग्रंथ संसार में लोकप्रिय हुआ। आज संसार की लगभग सभी भाषाओं में इसका अनुवाद हो चुका है।

सत्यार्थप्रकाश जो अनेक विषयों का भण्डार है। महर्षि दयानंद ने सत्यार्थप्रकाश में अन्तरिक्ष विज्ञान का भी उल्लेख किया है। यह सम्पूर्ण सृष्टि पंचमहाभूत के आधार पर बनी हुई है। पंचमहाभूत में आकाश, वायु, जल, अग्नि और पृथ्वी है। यह पंच तत्व परमाणु रूप में सम्पूर्ण सृष्टि में विद्यमान हैं। इन परमाणुओं के मिलन से ही अन्तरिक्ष के लोक लोकान्तरों का सृजन हुआ है। जिस प्रकार पृथ्वी पर ईश्वर, जीव और प्रकृति के आधार पर प्राणी जगत का निर्माण हुआ उसी प्रकार अन्य लोक लोकान्तरों में भी प्राणी जगत का सृजन हुआ ही होगा।

महर्षि दयानंद ने सत्यार्थप्रकाश के अष्टम समुल्लास में सृष्टि उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय विषय पर अपना विमर्ष प्रस्तुत किया है, उन्होंने वेदों के आधार पर यह सत्य जनता के सामने रखा कि- यह सृष्टि बनती बिगड़ती रहती है और जैसी पूर्व कल्प में सूर्य, चन्द्र और लोक लोकान्तर और उनमें प्राणियों का निवास था वैसा ही वर्तमान कल्प में है। और यह प्रवाह निरन्तर जारी रहता है। सत्यार्थप्रकाश में महर्षि ने इस प्रश्न का समाधान उचित ही किया है। ईश्वर ने यह सृष्टि क्यों बनाई, अगर नहीं बनाता तो वह आराम से रहता। इसका उत्तर उन्होंने सत्य ही दिया। यह आलसी और दरिद्र लोगों की बातें हैं, पुरुषार्थी की नहीं जीवों को प्रलय में क्या सुख और क्या दुःख है? जो सृष्टि के सुख दुःख की तुलना की जाय तो सुख कई गुना अधिक होता है। पवित्रात्मा जीव मुक्ति साधन कर मोक्ष के आनंद को भी प्राप्त होते हैं। जिस प्रकार दिन के बाद रात और रात के बाद दिन होता है वैसे ही सृष्टि बनती और बिगड़ती रहती है।

यंहा यह भी उल्लेख महर्षि ने किया है कि- एक ब्रह्माण्ड में एक ही सूर्य रहता है जो सभी लोक लोकान्तरों को प्रकाशित करता है। इससे यही सिद्ध होता है कि- इस सृष्टि में अनेक सूर्य होंगे जो अपने अपने ग्रहों को साथ लेकर स्थित है। इस विशाल- अपरिशित अकाश में अनेक आकाश गंगा हैं, उनमें भी अनेक सूर्य, चन्द्रमा, नक्षत्र होंगे। आज वैज्ञानिकों ने अन्तरिक्ष में के अनेक रहस्यों को उजागर कर दिया है। अन्तरिक्ष में पृथ्वी जैसे ग्रहों की भी खोज की है, जो हमारी पहुंच में भी नहीं आ सकते वहां जाने में अनेक प्रकाश वर्ष लग जावेगे जब तक यह मानव देह भी नहीं सह सकती। वहां पहुंचने में अनेक पीढ़ी व्यतीत हो जायगी।

महर्षि ने सत्यार्थप्रकाश के अष्टम समुल्लास में यह प्रश्न उठाया है- सूर्य, चन्द्र, और तारे क्या वस्तु है? और उसमें मनुष्यादि प्रजा भी रहती है या नहीं। उन्होंने उत्तर में कहा- ये सब भूगोल लोक और इसमें मनुष्यादि प्रजा भी रहती है। क्योंकि।

एतेषु हीद सर्व वसु हितमेते हीद सर्व वासयन्ते तस्माद्वसव इति॥

शत. १४/६/७/४

पृथ्वी, द्यौ, अग्नि, वायु, अन्तरिक्ष चन्द्र, नक्षत्र और सूर्य इनका वसु नाम इस लिये है कि इन्हीं में सब पदार्थ और प्रजा बसती है और ये ही सबको बसाते हैं। इस लिये वास के निवास करने के घर हैं। इस लिये इनका नाम वसु है। जब पृथ्वी के समान सूर्य चन्द्र और नक्षत्र वसु है पश्चात उनमें इसी प्रकार प्रजा के होने में क्या सन्देह? और जैसे परमेश्वर का यह छोटासा लोक मनुष्यादि सृष्टि से भरा हुआ है तो क्या यह सब लोक शून्य होंगे। परमेश्वर का कोई भी काम निष्प्रयोजन नहीं होता तो क्या इतने असंख्य लोकों में मनुष्यादि सृष्टि न होतो सफल कभी होसकता है? इसलिये सर्वत्र मनुष्यादि सृष्टि है। महर्षि ने यह भी स्पष्ट किया है कि- पृथ्वी के अलावा लोक-लोकान्तर में रहने वाले मनुष्यादि सृष्टि की आकृति में भेद होना संभव। जैसे इस देश में चीनी, हब्सी, और आर्यावर्त, यूरोप, में अव्यय और रंग रूप में आकृति का भी थोडा थोडा भेद होता है, इसी प्रकार लोकलोकान्तर में भी भेद होते हैं। परन्तु जिस जाति की जैसी सृष्टि इस देश में है वैसी जाति ही की सृष्टि अन्य लोकों में भी है। जिस जिस शरीर के प्रदेश में नैत्रादि अंग हैं उसी प्रदेश में लोकलोकान्तर में भी उसी जाति के अव्यय भी वैसे ही होते हैं। क्योंकि-

सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्व मकल्पयत् दिवच पृथ्वीआन्तरिक्षमधो स्वः। १०/१९०/३१।

परमात्मा ने जिस प्रकार के सूर्य, चन्द्र द्यौ, भूमि, अन्तरिक्ष और तत्रस्थ सुख विशेष पदार्थ पूर्व कल्प में रचे थे वैसे ही इस कल्प अर्थात् इस सृष्टि में रचे हैं तथा सब लोकलोकान्तरों में भी बनाये हैं। भेद किंचिन्मात्र नहीं होता।

महर्षि का यहां तक दावा है कि- जिस प्रकार हमारी पृथ्वी पर वेद हैं उसी प्रकार अन्य लोकलोकान्तरों में भी वेद का प्रकाश है। जिस प्रकार एक राजा के राज्य में एक से कानून होते हैं। उसी प्रकार राजराजेश्वर के पूरी सृष्टि में ऐसेही नियम हैं। जिस प्रकार माता पिता का सम्मान करना, दुष्टों, चोरों को दंडित करने के नियम हैं और सज्जनों की रक्षा करना, उनका सम्मान करना हैं उसी प्रकार अन्य लोकलोकान्तर में भी इसी प्रकार के वेदोक्त नियम समान रूप से हैं। उनमें कोई भेद नहीं है।

महर्षि का यह भी दावा है कि- जैसे सांसारिक सुख शरीर के आधार से भोगता है। वैसे परमेश्वर के आधार मुक्ति के आनंद को जीवात्मा भोगता है। वह मुक्त जीव अनन्त व्यापक ब्रह्म में स्वच्छन्द धूपता, शुद्ध ज्ञान से सब सृष्टि को देखता, अन्य मुक्तों के साथ मिलता, सृष्टिविद्या को क्रम से देखता हुआ सब लोक लोकान्तरों अर्थात् जितने ये लोक दिखते हैं और नहीं दिखते हैं उन सबमें घूमता है, वह सब पदार्थों, जो कि उसके ज्ञान के आगे हैं। देखता है जितना ज्ञान अधिक होता है उसको उतना ही आनंद अधिक होता है।

भगवान श्रीकृष्ण ने भी जीवात्मा का लक्षण बताते हुए गीता में कहा है:-

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः। न चैनं क्लेदयन्त्यो यो न शोषति पावकः गीता २/३३

इस आत्मा को शस्त्र नहीं काट सकते, इसको आग जला नहीं सकती, इसको जल नहीं गला सकता और वायु नहीं सुखा सकता। इससे यही सिद्ध होता है कि- यह जीवात्मा धधकते हुए सूर्य में भी प्रवेश कर सकती है। उसकी गर्मी उसे जला नहीं सकती, जिस गृह में जल ही जल हो वहां इस जीवात्मा को वह- गीला नहीं कर सकता, और जिस गृह में हवा तेज चल रही हो वह इसे सुखा नहीं सकता। इससे यही सिद्ध होता है कि जीवात्मा इस विशाल, असीम अन्तरिक्ष में कहीं भी जा सकता है। और उसका ज्ञान प्राप्त कर सकता है। इस मानव देह में अगर कोई मुक्ति चाहता है तो उसे पूर्ण वैराग्य का जीवन जीते हुए, छल कपटपूर्ण व्यवहार का त्याग करते हुए, निर्मल और पूर्ण ज्ञानी होने पर वह ब्रह्मानन्द को प्राप्त कर सकता है। महर्षि ने ब्रह्माण्ड का ज्ञान प्राप्त करने की यह विधि बतायी है। इस शरीर के माध्यम से हम केवल जहां तक हमारी नजर जाती है और वैज्ञानिक साधनों की सीमा तक ही हम ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं।

महर्षि ने यह भी बताया कि- लोकलोकान्तर की भाषा संस्कृत ही है। अगर आज के वैज्ञानिक संस्कृत भाषा में अन्य गृहों से सम्पर्क साधें तो उनको सन्देश प्राप्त हो सकते हैं। यह प्रयोग करना चाहिये। महर्षि ने सत्यार्थ प्रकाश के अष्टम और नवम समुल्लास में अन्तरिक्ष संबंधी कई जानकारी दी है। यह भी कहा जाता है कि- लंका का राजा रावण मंगलगृह तक जाता था। साथ ही नारद मुनि लोक लोकान्तरों की यात्रा करते थे, यह कैसे संभव हुआ। आज का वैज्ञानिक मंगल गृह और अन्य दूरस्थ गृहों की जानकारी प्राप्त कर रहा है और वहां जाने के प्रयास में लगा है। चांद पर मानव पहुंच भी चुका है। आज मानव मंगल गृह पर पहुंचने का प्रयास कर रहा है। महर्षि ने जो विधि बतायी है, क्या हम वह जीवन जी सकते हैं सुखदेव व्या १८, जहाजगली, उज्जैन।

गायत्री छन्द

नमस्कर प्रभु धन्यवाद मुझे मानुष जनम दिया, सृष्टियों का रचयिता है तू विभिन्न प्राणियों को उत्पन्नकर अदृश्य पालन पोषण कर रहा है तू तुझसे ही पाते प्राण सब, तन मनके दुखों से मुक्ति, सुखों का दाता है तू शीश नवाता हूँ महान तेज को आत्माओं को देता है शान्ति का प्रकाश तू सृष्टी की अद्भुत रचना है पृथ्वी, आकाश, अग्नि, वायु, जल, सूर्य, चांद, तारों में महापुरुषों को दिव्य दृष्टी शक्ती सम्पन्न पुत्र बना भेजता है संसार में निराकार का धरते ध्यान कामक्रोध, लोभ मोह अहंकार, पांचों से मुक्ति दो भगवान प्रार्थना है ईश्वर ज्ञानेन्द्रिया मन बुद्धी को कुमार्ग से बचा श्रेष्ठ मार्ग परचला कृपा करो साथरहो सुन्दर भविष्य की प्रतीक्षा में सफल हो जाऊं मैं

- महात्मा अखिल मुनि, ज्वालापुर

ईश्वर स्तुति प्रार्थना याचना

ओउम् व सर्वेशसकल सुख दाता, शुद्धस्वरूप विधाता है उसका कष्ट नष्ट हो जाते, शरण तेरी जो आता है सारे दुर्गुण दुर्व्यसनों से बचने की नाथ शक्ति दीजे मंगलमय गुण-कर्म-पदारथ प्रेम-सिन्धु सबको दीजे तू ही स्वयंप्रकाश, सुचेतन, सुखस्वरूप, शुभ व्राता सूर्य-चन्द्र लोकादिक को तू रचता और टिकाता है पहिले था अब भी तू ही है घट-घट में व्यापक स्वामी बुद्धी योग अगतीतम द्वारा तुझको, पावें हम अन्तर्यामी तू ही आत्मज्ञान बल दाता, सुयश विज्ञान गाते है, तेरे वरण-शरण में आकर, भवसागर तर जाते है' तुझको ही जपना जीवन है, मरण तुझे विसराने में मेरी सारी शक्ति लगे प्रभु तुझसे लगन लगाने में तुमने अपनी अनुपम माया से जग-ज्योति जगाई है। मनुज और पशुओं को रचकर निज महिमा प्रगटाई है अपने हिय-सिंहासन पर श्रद्धा से तुझे बिठाते हैं भक्ति-भाव की भेंटें लेकर शरण तुम्हारी आते हैं तारे, रवि चन्द्रादि बनाकर निज प्रकाश चमकाया है, धरणी को धारणा कर तूने कौशल अलख लखाया है तू ही विश्व-विधाता, पोषक, तेरा ही हम ध्यान धरें शुद्ध भाव से भावन! तेरा भजनमृत का पान करें तुझसे बड़ा न कोई जग में, सबमें तू ही समाया है। जड़ चेतना सब तेरी रचना, तुझमें आश्रय पाया है, हे सर्व शक्तिमान विश्वपती, तूने ये साज सजाया है तव रित निरण्यबुद्धी दिजिए यही भक्त को भाया है तू गुरु है, प्रवेश भी तू है, पाप-पुण्य फल-दाता है भक्तों को, इस भव-बन्धन से, तू ही मुक्त करता है तू है निराकर अद्वैत महाप्रभु, सर्वकाल का ज्ञाता है तू है स्वयं प्रकाश रूप प्रभु, सबका सिरजन हार तू है रसना निशिदिन रते तुम्हीं को, मन में बसता सदा तू है कुटिल पाप दुष्कर्मों से मुक्ति दो भगवन दयानिधान। अपने भक्तजनो को भगवान दीजे यही विशुद्ध वरदान

चतुर्वेद शतकम् महायज्ञ सम्पन्न

आर्य समाज नेमदार गंज (नवादा) बिहार द्वारा

दिनांक २९ नवम्बर से २ दिसम्बर तक चतुर्वेद शतकम् महायज्ञ सह मगध प्रमण्डलीय आर्य महा सम्मेलन पूरी भव्यता से सम्पन्न हो गया जिसमें यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य श्री हरिशंकर जी अग्निहोत्री (आगरा) मन्त्र पाठ हाथरस की बहन सुश्री रामकुमारी जी आर्य वेदमणि एवं सुश्री वन्दना (सूरत) द्वारा सम्पन्न हुआ। २९ नवम्बर को अपराहन २ बजे से राष्ट्रीय कवि श्री सारस्वत मोहन मनीषी (दिल्ली) श्री रमेन्द्र कुमार गुप्ता महामंत्री बिहार राज्य आर्यप्रतिनिधि सभा पटना, आचार्य श्री उमाशंकर जी शास्त्री योग (सूरत) आचार्य डा. श्री राधाकान्त सिंह नेचुरोपैथ (समस्तीपुर) के नेतृत्व में स्थानिय विद्यालयों, शिक्षण संस्थानों के छात्र छात्राओं प्राचार्यों शिक्षकों, अभिभावकों सामान्य जन, आगत अतिथि विभिन्न आर्य समाजों के जागरूक एवं सक्रिय कार्यकर्ताओं की भव्य शोभायात्रा निकाली गई जिसमें रास्ते में ऊँचे भवनों से होती पुष्प वृष्टि ने तथा स्थान स्थान पर स्वागत की व्यवस्था ने सबको हर्षित किया। पूरे गाँव में वैदिक धर्म की जय का नाद गूँज उठा। शोभा यात्रा समापन पर राष्ट्रीय कवि श्री सारस्वत मोहन मनीषी द्वारा 'ओ३म' ध्वज का उच्च दण्ड पर उत्तोलन किया गया। दीप जलाकर कार्यक्रम का उद्घाटन प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री रमेन्द्र गुप्ता की, उपप्रधान श्री ज्ञानेश्वर शर्मा जी द्वारा विधिवत किया गया। उपस्थित आचार्यों, डी. ए. वी. के प्राचार्यों एवं शिक्षकों का शाल एवं मोमेन्द्रो देकर सम्मानित किया गया। विशिष्ट अतिथियों के सम्मान अवसर पर हिसुआ विधान सभा के सदस्य श्री अनिल सिंह जी ने भी उपस्थित होकर उत्साह वर्द्धन किया। चतुर्वेद शतक महायज्ञ में यजमान दम्पतियों ने चारों दिवस सहभागिता निभाई। मन्दिर निर्माण की अपीलपर स्थानिय प्रबुद्ध आर्यों ने दान की घोषणा की दिल्ली के सम्माननीय सारस्वत मोहन मनीषी जीने तत्काल २१,०००/ का दान देकर प्रतिस्पर्द्धा प्रारम्भ कर दिया।

विचार शक्ति का चमत्कार

(कर्म-विचार सर्वोपरि हैं)

हमारे सूक्ष्म शरीर में व्याप्त कारण शरीर के रूप में विचार शक्ति सब शक्तियों से श्रेष्ठ है। कई प्रकार की शक्तियाँ हैं जैसे प्राण शक्ति, शारीरिक शक्ति, ज्ञान जिसमें ईश्वरीय ज्ञान व भौतिक ज्ञान दोनों का समावेश है। ज्ञान अपने आप में स्थिर शक्ति है जिसे अर्जित कर व्यवहार में लाना होता है, इंधन शक्ति जैसे बिजली भाप, कोयला, पेट्रोल, डीजल इत्यादि जो कि ट्रेन वाहनो के लिए उर्जा शक्ति हैं। इसी कई प्रकार की शक्तियाँ हैं लेकिन विचार शक्ति इन सब शक्तियों से परे है जो कि सबका नियमन करती है व स्वाभाविक रूप से नैमिकता गिरा हुआ है। कहते हैं knowledge is power यानि ज्ञान या जानकारी अपने आपमें एक शक्ति है। यदि हमारे विचार चल रहे हैं तो जीवन चल रहा है, यदि विचार स्थिर है तो जीवन स्थिर है, यदि विचार नकारात्मक है तो जीवन नकारात्मक है, यानि हमारे विचार जिस दिशा में जा रहे हैं, हमारा जीवन भी उसी दिशा में चलने लगेगा। जहाँ तक कर्म का प्रश्न है कर्म या विचार निरंतर चलता रहता है। जैसे फल प्राप्त करना, तत् पश्चात् उस फल को बनाए रखना फल का उपभोग करना तथा फल में वृद्धि करना। कर्म या विचार कभी नहीं थमते। कभी कभी हम कहते हैं कि फलाना व्यक्ति कुछ करता नहीं है, सारे दिन घर में बैठता रहता है। लेकिन यह हमारी भूल है। मनुष्य यदि अकेले में बैठे बैठे विचार कर रहा होता तो वह कर्म ही कर रहा होता है। निविचार होना यानि विषय होने को ध्यान भी अवस्था कहते हैं। उस अवस्थामें जीवात्मा शक्तियों का संचय कर रहा होता है। फिर उन शक्तियों को किस रूप में इस्तेमाल करना यह जीवात्मा या हमारे हाथ में होता है। यह पूरा अन्वेषण तीन गुढ़ सिद्धांतों पर आधारित है। १) कर्म - विचार है तो फल है, २) जैसा विचार वैसा फल, ३) जितना विचार उतना फल। शेष अगले अंक में। धन्यवाद!

राजकुमार भगवतीप्रसाद गुप्त, मंत्री आर्य समाज, वाशी

काशी शास्त्रार्थ स्मृति वैदिक
महोत्सव सोत्साहपूर्वक सम्पन्न

आर्य उपप्रतिनिधि सभा वाराणसी के तत्वावधान में महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ स्थल आनन्द बाग दुर्गाकुण्ड में आयोजित १४६ वे वार्षिक शास्त्रार्थ स्मृति के अवसर पर गत वर्षों की भाँति तीन दिवसीय वैदिक महोत्सव २९ नवम्बर से प्रारम्भ होकर २३ नवम्बर को सोत्साह पूर्वक सम्पन्न हुआ। महोत्सव को डॉ. चन्द्रशेखर लोखण्डे शास्त्री लातूर (महाराष्ट्र) स्वामी केवलानंद जी, डॉ. माधुरी रानी, श्री शिवनारायण सिंह गौतम, श्रीमती सुनीता शास्त्री रेवाड़ी ने अपने प्रभावशाली व्याख्यानों तथा स्वामी सुरेन्द्रानन्द जी, श्री रवीन्द्र कुमार आर्य व बाल गायक सोमेन्द्र आर्य ने अपने ओजस्वी व मधुर भजनों द्वारा वैदिक सिद्धान्तों एवं महर्षि दयानन्द के जीवन पर श्री रवीन्द्र कुमार जायसवाल, अन्तर जनपदीय सांस्कृतिक निदेशक डॉ. रत्नेश वर्मा, भाजपा महानगर अध्यक्ष श्री प्रदीप अग्रहरी जी ने अपने उपस्थिति से समारोह को गरिमा प्रदान की। तथा महर्षि दयानन्द के कार्यों पर विस्तृत व्याख्यान दिया।

इस अवसर पर पूर्वी उत्तर प्रदेश के विभिन्न जनपदों के प्रमुख कार्यकर्ताओं ने डॉ. लोखण्डे जी के आर्य सामाजिक लेखन व्याख्यान एवं एक सक्रिय कार्यकर्ता के रूप में अन्य सामाजिक सेवा आदि रचनात्मक कार्यों को देखते हुए उनका सहृदय स्वागत किया तथा जिला सभा वाराणसी द्वारा उनके सम्मान में अभिनन्दन पत्र व स्मृति चिन्ह प्रदान किया गया। सम्मानकर्ताओं में प्रमुख रूप के श्री राजकुमार वर्मा सोनभद्र, श्री सुरेन्द्र कश्यप, श्री प्रताप जिवनानी वाराणसी, श्री बच्चे लाल सिंह मिर्जापुर, श्री शिवधन आचार्य, श्री रजनीश आर्य व श्री शीतल प्रसाद आर्य-देवरियाँ, श्री देवेन्द्र नाथ आर्य-जौनपुर, श्री विरेन्द्र नाथ आर्य-सोनभद्र, श्री कमला प्रसाद सिंह बलियाँ आदि थे। इस ऐतिहासिक शास्त्रार्थ स्थल पर डॉ. चन्द्रशेखर लोखण्डे जी की नवरचित पुस्तक "दयानन्दोक्त औषधि आरोग्य सूत्र" का विमोचन पी.सी.एस. अधिकारी डॉ. रत्नेश वर्मा के कर कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ।

वैदिक महोत्सव के तीनों दिनों पाणिनी महाविद्यालय के आचार्य संजीवनी आर्य के ब्रह्मत्व में यज्ञ व वेद पाठ ब्रह्मचारिणियों द्वारा सम्पन्न हुआ।

महोत्सव के अन्तिम दिवस 'वेद प्रचार सप्ताह' के आयोजनमें संलग्न भोजबीर, चिरईगांव मुगलसराय, चन्दौली, चितईपुर, काजीसराय काशीहिन्दूविश्वविद्यालय तथा लल्लापुर की आर्यसमाजों को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया तथा वेद प्रचार में सक्रिय भूमिका प्रदान करने वाले कार्यकर्ताओं का माल्यार्पण द्वारा अभिनंदन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता एवं आभार प्रधान श्री अजित कुमार आर्य तथा मंच संचालन मंत्री, श्री प्रमोद आर्य व उपप्रधान श्री वेद प्रकाश वृजवासी ने किया। अतिथियों का स्वागत श्री सत्येन्द्र आर्य, श्री शशिकान्त आर्य, श्री अनन्त लाल, श्री प्रमोद कुमार आर्य, श्री प्रदीप आर्य ने किया।

प्रमोद आर्य- मंत्री

कुछ सवाल-जबाब

- अभिमन्यु कुमार खुल्लर

- प्रश्न - तुम्हारा नाम?
- उत्तर - ओ३म
- प्रश्न - बाप का नाम?
- उत्तर - मैं स्वयं ही अपना बाप और मा हूँ क्योंकि मैं अजन्मा हूँ
- प्रश्न - कहाँ रहते हो?
- उत्तर - सर्वत्र - सब जगह।
- प्रश्न - क्या काम करते हो?
- उत्तर - सृष्टि की रचना, सर्वधन और समग्र।
- प्रश्न - सृष्टि रचना से क्या तात्पर्य है?
- उत्तर - सब ही जीव-जन्तु, कीट-पतंगे आदि मैंने ही बनाए हैं? असंख्य सूर्य, नक्षत्र मण्डल, चांद सितारे मैंने बनाए हैं।
- प्रश्न - किस मटेरियल से यह सब बनाते हो?
- उत्तर - पृथ्वी, जल, अग्नि, आकाश और वायु।
- प्रश्न - तुम्हारे पास कितने इन्जीनियर मजदूर आदि हैं।
- उत्तर - एक भी नहीं।
- प्रश्न - क्यों?
- उत्तर - मैं सर्व शक्तिमान हूँ। समस्त निर्माण कार्य-डिजाइन से लेकर पूर्णकप प्रदान करने तक का समस्त कार्य मैं अकेला ही करने में समर्थ हूँ। मुझे किसी बाह्य शक्ति की आवश्यकता नहीं है।
- प्रश्न - सृष्टि रचना किसके लिये करते हो?
- उत्तर - जीवात्मा के लिये।
- प्रश्न - जीवात्मा का रचनाकार कौन है?
- उत्तर - आत्म की स्वतंत्र सत्ता है। उसकी रचना कोई नहीं करता। उसे जीव का चोला मैं देता हूँ तभी वह जीवात्मा कहलाता है।
- प्रश्न - तुम कैसे हो?
- उत्तर - मैं सच्चिदानन्द हूँ। मैं कभी न मिटने वाला सत्य हूँ। मैं चित्त यानी चैतन्य हूँ, रचनाकार हूँ और आनन्द हूँ। मैं सुख-दुःख, ईर्ष्या-द्वेष सभी से मुक्त हूँ। सौर सर्वदा एकरस-आनन्द में रहता हूँ।
- प्रश्न - जीवात्मा क्या है?
- उत्तर - आत्मा, सत्य और चैतन्य है।
- प्रश्न - जीवात्मा को सच्चिदानन्द क्यों नहीं बनाया?
- उत्तर - क्या एक म्यान में दो तलावारें रह सकती हैं?
- प्रश्न - जब तुम भी रचनाकार हो और जीवात्मा भी रचनाकार है फिर तुम में और जीवात्मा में क्या अन्तर है?
- उत्तर - मेरी रचना पूर्णतया स्वतंत्र, निर्दोष, त्रुटि रहित है क्योंकि मैंने उसे निश्चित, अपरिवर्तित शाश्वत नियमों में बांध रखा है। जीवात्मा मेरी रचनाओं की नकल करता है। मेरी तरह का स्वतंत्र रूप मैं एक भी जीव नहीं बना सकता। वह आंख नहीं बना सकता। केवल रिपेयर करना जानता है।
- प्रश्न - क्या तुम अपनी रचना को मिटा भी सकते हो?
- उत्तर - सम्पूर्ण रचना को मिटा भी सकता हूँ और निश्चित कालावधि के पश्चात मिटाता भी हूँ। उस मिटाने को तुम लोग प्रलय कहते हो।
- प्रश्न - वर्तमान सृष्टि रचना कितने काल के लिये है?
- उत्तर - चार अरब वर्ष के लिये।
- प्रश्न - अभी कितना समय व्यतीत होगया है?
- उत्तर - काल गणना तो पल-पल में वृद्धि पाती है फिर भी लगभग दो अरब वर्ष हो चुके हैं।
- प्रश्न - 'लगभग' नहीं। कुछ ठीक-ठीक बताओ?
- उत्तर - तुम्हें ठीक स्मरण रहे इसलिये 'लगभग' बताया है। वैसे वर्तमान सृष्टि रचना को एक अरब ९६ करोड़ आठ लाख ५३ हजार ११६ वर्ष हो चुके हैं (परोपकारी नवम्बर प्रथम अंक २०१५)। यह भी सत्य है कि यह गणना मानव, पृथ्वी द्वारा सूर्य की परिक्रमा करने के कारण करता है। मैं सर्वदा रहता हूँ, इसलिये कालातीत हूँ।
- प्रश्न - संसार में सब जीवों को सुख भोगते भी देखा है और दुःख भोगते भी देखते हैं; ऐसा क्यों है?
- उत्तर - सुख-दुःख मानव (जीवात्मा) को उसके कर्मानुसार मिलते हैं क्योंकि जीवात्मा एक स्वतंत्र सत्ता है।
- प्रश्न - सुख दुःख देने का फैसला कौन करता है? और क्या कभी उस फैसले में गलती नहीं होती।
- उत्तर - मैं करता हूँ।
- प्रश्न - कैसे? सबूत गवाह आदि कौन होते हैं?
- उत्तर - न्यायाधीश बन कर। मुझे फैसले के लिये किसी सबूत, गवाह आदि की जरूरत नहीं पड़ती है। क्योंकि वादी और प्रतिवादी दोनों की आत्मा में सदैव विराजमान रहता हूँ। और घटना के समय, सर्वत्र मौजूद रहता हूँ जो अनाचारी है, अत्याचारी हैं, उन्हें कर्मानुसार दुःख मिलता है और जो सदा चारी हैं उन्हें सुख मिलता है।
- प्रश्न - पर दिखाई तो यही पड़ता है कि अत्याचारी, अष्टाचारी गुल-छरे उड़ा रहे हैं और सदाचारी दुःख पा रहे हैं।
- उत्तर - पर कब तक? बाकी नज़रो का फेर है। अब मैं इन प्रश्नों को विराम देता हूँ क्योंकि तुम घर गए होगे। बोर हो गए होगे।
- नहीं! मैं कभी नहीं थकता और न बोर होता हूँ क्योंकि ये मेरे नहीं, जीवात्मा के गुण हैं। मैं अजन्मा, अजर और अमर हूँ इसलिये मुझे तुम थके प्रति होते हो। तुम्हारा जी चाहे जब प्रश्न कर लेना, मैं हर समय जाग्रत रहता हूँ, कभी सोता नहीं हूँ। मैं तुम्हें उत्तर देने के लिये सदैव उपलब्ध रहूँगा। अच्छा, फिर मिलेंगे।

२२, नगर निगम क्वार्टर्स, जीवाजीगंज, लश्कर ग्वालियर

पिन ४७४००९ (म. प्र.)

मो. : ९३००० ८५४८४

इलाज-मैथी दाना

स्पर्श से लाभ दर्द जलन सूजन

Drugless cure in your Home

O.S. Varma

Yogachara M.Com., LL.B (P)

मैथी दाना-आरोग्य का खजाना

मैथी दाना, जितने साल जिसकी आयु हो उतने दाने लेकर रोजाना प्रातः खाली पेट, धीरे-धीरे खूब चबा-चबाकर (अथवा यदि शाम को ले तो मैथीदाना पानी की सहायता से निगलना चाहिए) खाता रहे तो व्यक्ति सदैव निरोग और चुस्त बना रहेगा और मधुमेह, जोड़ों के दर्द, शोध, रक्तचाप, बलगमी बीमारियाँ, अपचन आदि अनेकानेक रोगों से बचाव होगा। वृद्धावस्था की व्याधियाँ (यथा-सायटिका, घुटनों का दर्द, हाथ पैरों का सुन्न पड़ जाना, मांसपेशियों का खिंचाव, भूख न लगना, बार-बार मूत्र आना, चक्कर आना आदि) उसके पास नहीं फटकेगी। ओज, कान्ति, और स्फूर्ति में वृद्धि होकर व्यक्ति दीर्घायु होगा।

यद्यपि अलग-अलग बीमारियों के इलाज के लिए-मैथी दाना का प्रयोग कई प्रकार से किया जाता है जैसे - मैथी दाना भिगोकर उसका पानी पीना या भिगाये मैथी दाना को घोट छानकर पीना, उसे अंकुरित करके चबाना या रस निकालकर पीना, उसे उबालकर उसका पानी पीना या सब्जी बनाकर खाना, खिचड़ी या कढ़ी पकाते समय उसमें डालकर सेवन करना, साबुत मैथी दाना प्रातः चबाकर खाना और रात्रि में पानी संग निगलना, भुनकर या वैसे ही उसका दलिया या चूर्ण बनाकर ताजा पानी के साथ फक्की लेना, मैथीदाना के लड्डू बनाकर खाना आदि परन्तु मैथी के सेवन का निरापद और अच्छा तरीका है- उसका काढ़ा या चाय बनाकर पीना।

१) रक्तचाप तनाव मम क्रोध २) अनिद्रा ३) कफ खांसी ४) दमा हृदय

स्पलीन पर मैथी स्पर्श करने से मधुमेह ठीक होता है। शरीर में लासिका तंत्र बराबर कार्य करने लगता है। जिससे सूजन नहीं आती। आमाशय पर लगाने से पाचन अच्छा होता है। लीवर, पित्ताशय, गुदा, आंतो पर मैथी लगाने से संबंधित अंगों से विजातीय तत्व दूर होने लगते हैं और वे सारे अंग अपनी क्षमतानुसार कार्य करने लगते हैं।

शरीर के जिस स्थान पर बाल हो और टेप से मैथी दानों का स्पर्श संभव न हों वहाँ मैथी का लेप कर उपचार किया जा सकता है। आग से जलने पर दानेदार मैथी को पानी में पीस कर लेप करने से जलन दूर होती है, फफोले नहीं पड़ते। मैथी का सिर पर लेप करने से बाल नहीं गिरते तथा गंजों के बाल आने लगते हैं। बाल अपने प्राकृतिक रंग में मुलायम बने रहते हैं बालों की लम्बाई बढ़ती है। ताजा पत्तियों का पेस्ट रोज नहाने से

पूर्व चेहरे पर लेप करने से चेहरे का रुखापन, झुरियाँ गर्मी से होने वाले फोड़े फुन्सियाँ आदि ठीक होती हैं।

पगथली के अंगूठों और अंगुलियों में मैथी लगाने से नाड़ी संस्थान संबंधी रोगों में शीघ्र राहत मिलती है।

मैथी कैसे और कितनी देर लगाएँ

बाजार में अलग माप की चिपकाने वाली कागज की टेप मिलती है। आवश्यकतानुसार माप की टेप पर मैथीदाणा को चिपका दें। चारों तरफ थोड़ा स्थान खाली छोड़ दे ताकि टेप त्वचा पर आसानी से चिपक सके। मैथी दाणों का स्पर्श तब तक शरीर पर रहने दें, जबतक उस स्थान पर किसी प्रकार की प्रतिकूलता अथवा सिर में भारीपन अनुभव न हो। मैथी अपना प्रभाव लगाने के तुरन्त बाद अनुभव कराने लग जाती है। मात्र तीन दिन के नियमित प्रयोग से उसके चमत्कारी प्रभावों का अनुभव होना प्रारम्भ होने लगता है।

उपसंहार

सारांश यही है कि मैथी स्पर्श चिकित्सा सहज, सरल, सस्ती, प्रभावशाली, दुष्प्रभावों से रहित, वैज्ञानिक, पूर्ण स्वावलंबी एवं अहिंसक होती है, जिसका शरीर के रोगग्रस्त भाग पर शीघ्र प्रभाव पड़ता है। मैथी दर्द नाशक एवं रक्त शोधक होती है। विजातीय तत्वों को दूर कर शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाती है। जिससे निष्क्रिय एवं रोगग्रस्त भाग रोग मुक्त होने लगते हैं। अतः भविष्य में दवाओं के बढ़ते दुष्प्रभावों का प्रभावशाली विकल्प मैथी स्पर्श चिकित्सा के समान दवाओं के शरीर पर स्पर्श से हो तो आश्चर्य नहीं?

Administrative officer RTD.

Birla Naturopathy & Yog Ketrda, Pilant-333031

Formerty :

Doctor Incharge, Mandelia Naturopathy Hospital, Pilant,

Deputy Registrar, B.I.T.S, Pilant,

Yoga Consultant to

It H. Maharani Gayatri Devi of Jaipur

H. E. Governor of Rajasthan, Jaipur

Served NETAJI SUBHASH CHANDRA BOSE

(6th June 1969)



विभिन्न रोगों का यज्ञ द्वारा इलाज

रोग : १) टाइफाईड

हवन धूप : नीम चिरायता, पित्तपापड़ा, त्रिफला समभाग घी मिश्रित धूनि।

रोग : २) ज्वरनाशक

हवन धूप : अजवाइन की धूनि आग पर दें।

रोग : ३) नजला, जुकाम, सिरदर्द

हवन धूप : मुनक्का की धूनि आग पर दें।

रोग : ४) नेत्रज्योति वर्धक

हवन धूप : शहद की धूनि आग पर दें।

रोग : ५) मस्तिष्क बलवर्धक

हवन धूप : शहद, सफेद चन्दन की धूनि आग पर दें।

रोग : ६) वातरोग नाशक

हवन धूप : पिप्पली की धूनि आग पर दें।

रोग : ७) मनोविकार नाशक

हवन धूप : गूगल और अपामार्ग की धूनि आग पर दें।

रोग : ८) मधुमेह नाशक

हवन धूप : गूगल, लोभान, जामुन वृक्ष की छाल, करेला का डंठल सम्भाग घी मिश्रित धूनि दें।

रोग : ९) मानसिक उन्माद नाशक

हवन धूप : सीताफल के बीज और जटामासी चूर्ण.....

रोग : १०) चित्त भ्रम नाशक

हवन धूप : कचूर, खस, नागरमोथा महुआ, सफेद चन्दन, गुग्गल, अगर, बड़ी इलायची, नरवी और शहद सम्भाग।

रोग : ११) पीलिया नाशक

हवन धूप : देवदारु, चिरायत, नागरमोथा, कुटकी, वायविड्डग

रोग : १२) क्षय नाशक

हवन धूप : गूगल, सफेद चन्दन, गिलोय बांसा (अडूसा) १००-१०० ग्राम चूर्ण, कपूर ५० ग्राम, १०० ग्रा चूर्ण, कपूर ५० ग्राम, १०० ग्राम घी

रोग : १३) मलेरिया नाशक

हवन धूप : गूगल, लोभान, कपूर, कचूर, हल्दी, दारूहल्दी, अगर, वायविड्डग, बालछड़ (जटामासी), देवदारु, वच, कटू, अजवाइन, नीम पत्ते, सम्भाग चूर्ण, घी मिलाकर हवन करें तथा धूनि दें।

रोग : १४) सर्वरोगनाशिनी (अपराजित धूप)

हवन धूप : गूगल, वच, गन्ध, तृण, नीम पत्ते, आक पत्ते, अगर, राल, देवदारु, छिलका सहित मसूर, सम्भाग घी युक्त।

रोग : १५) संधिगत ज्वर नाशक (जोड़ों का दर्द)

हवन धूप : सम्भालू (निर्गुण्डी) के पत्ते, गूगल, सफेद सरसों, नीम पत्ते, राल-सम्भाग चूर्ण, घी मिश्रित धूनि।

रोग : १६) निमोनिया नाशक

हवन धूप : पोहकर मूल, वच, लोभान, गूगल, अडूसा-सम्भाग चूर्ण, घी मिश्रित धूनि।

रोग : १७) जुकाम नाशक

हवन धूप : खुरासानी अजवाइन, जटामासी, पशमीना कागज, लाल बूरा, सम्भाग चूर्ण की घी युक्त धूनि।

रोग : १८) पीनस (जुकाम का बिगड़ा रूप)

हवन धूप : बरगद पत्ते, तुलसी पत्ते, नीम पत्ते, वायविड्डग, सहजने की छाल सम्भाग चूर्ण में धूप का चूरा मिलाकर।

रोग : १९) श्वास-कास नाशक

हवन धूप : बरगद पत्ते, तुलसी पत्ते, वच, पोहकर मूल, अडूसा-पत्र सम्भाग चूर्ण घी युक्त धूनि।

रोग : २०) सिर दर्द नाशक

हवन धूप : काले तिल और वायविड्डग चूर्ण घी युक्त धूनि।

रोग : २१) चेचक-खसरा नाशक

हवन धूप : गूगल, लोभान, नीम पत्ते, गंधक, कपूर, काले तिल और वायविड्डग चूर्ण घी युक्त धूनि।

रोग : २२) जिब्हा तालू रोग नाशक

हवन धूप : मुलहठी, देवदारु, गंधाविरोजा, राल, गूगल, पीपल, कुलंजन, कपूर, लोभान सम्भाग घी धूनि।

रोग : २३) कैसर नाशक

हवन धूप : गूलर फूल, अशोक छाल, अर्जन छाल, लोघ्र, माजूफल, दारूहल्दी, हल्दी, खोपरा, तिल, जौ, चिकनी सुपारी, शतावर, काकजंघा, मोचरस, खस, मंजीष्ठ, अनारदाना, सफेद चन्दन, लाल चन्दन, गंधा विरोजा, नरवी, जामुन पत्ते, धाय के पत्ते सम्भाग चूर्ण में दस गुना शक्कर और एक गुना केसर से हवन।

- संदीप आर्य

पुस्तक "यज्ञ थेरेपी"

Management of
ARTHRITIS KNEE PAIN

A Drugless Treatment with Yoga Asanas, Pranayama, Nasal Cleaning, Stomach & Colon Cleaning, Acupressure, Diet Control, Ayurvedic Oil Massage, Naturopathy, Mind Control, Relaxation, Sukhma Yayama

DATE	: MON. 01.02.2016 to FRI. 19.02.2016
TIME	: 7.30 a.m. to 8.30 a.m. Saturday: Class at 7.00 a.m.
FEES	: Rs. 2000/- Sunday - Holiday
VENUE	: ARYA SAMAJ MANDIR, Linking Road, Santacruz (West).
COURSE	: Yogashtromani RAGHAVA SOMESHWAR
DIRECTOR	: WITH 34 YEARS EXPERIENCE. He has conducted more than 600 Health Management Workshops. With Positive Results in many Countries.
Enquiry	: 98692 67131 / 96197 29682 / 2660 2800

FEED BACK FROM STUDENTS OF EARLIER WORKSHOP

JANE BRAGANZA (RETIRED): Gradually friction in the knee joint lessened off, also the pain. This gave me confidence in walking. Motivation of teacher helped me to push further with confidence. The workshop have saved me from discomfort. On the whole it was a good experience of healthy living.

SUHAS GUJARATI (CINE METROGRAPHER): Within few days of workshop I did not know where my pain has disappeared. Now I was able to sit on the floor and do all Asanas and was enlightened about my life style changes like diet, positive attitude and physical fitness. At the end of the workshop I go with a Pain Free Knee Joint. I thank the teacher with the folded hand for the such a good results.

LOUIZA MOCKOV (Service): I feel confident that I have got positive results. Now the pain is much less. Stomach & Colon cleaning is a wonderful experience. I have got justice to my pain.

FORTHCOMING WORKSHOP
HEART CARE & HIGH BLOOD PRESSURE
from Mon. 22.02.2016 to Fri. 11.03.2016 - 7.30 am. to 8.30 am.

Please pass on the handbill to your neighbour & friends

पौष २०७९ (२०१६)

Post Date : 25-1-2016

MCN/136/2016-2018

MAHRIL 06007/31/12/2015-TC

पोष्ट आफिस : सांताक्रुज (प.)

आर्य समाज सान्ताक्रुज मुम्बई का मुखपत्र

संपादक : संगीत आर्य

मुद्रक एवं प्रकाशक : चन्द्रपाल गुप्त द्वारा कृष्ण प्रिंटिंग प्रेस,
२६, मंगलदास रोड, मुंबई-२. से मुद्रित कराकर आर्य समाज भवन,
वी. पी. रोड, (लिंकिंग रोड), सान्ताक्रुज (प.) मुंबई-४०० ०५४.
से प्रकाशित किया। दूरभाष : २६६० २८००/२६६० २०७५

टिकट

तेरी देखरेख में सतत जीता रहूँ।

आचार्य रामप्रसाद वेदालंकार

ओ३म् दृते दृह मा। ज्योक्ते संदृशि जीव्यासं ज्योक्ते संदृशि जीव्यासम्।

अन्वयः- दृते। मा दृह। ते संदृशि ज्योक् जीव्यासम् ते संदृशि ज्योक् जीव्यासम्।

अन्वयार्थः (दुते!) हे अपने नियम मे दृढतम परमेश्वर ! (मा दृह) मुझे दृढ बना, सुदृढ बना, जिस के कि मैं (ते संदृशि) तेरे संदर्शन में, तेरी सम्यक् दृष्टि में (ज्योक् जीव्यासम्) निरन्तर जीता रहूँ (ते संदृशि ज्योक् जीव्यासम्) तेरी देख रेख में सतत जीता रहूँ।

दृते- हे परम सुदृढ भगवन्! हे चट्टान के समान सुदृढ रहने वाले परमेश्वर! हे बाधा ओ को विदीर्ण करने वाले जगदीश्वर! (मा दृह) तू मुझे भी दृढ बना, मुझे भी सुदृढ बना। हे प्रभो ! (ते संदृशि ज्योक् जीव्यासम्) मैं चाहता हूँ कि मैं जीता रहूँ, मैं निरन्तर जीता रहूँ, मैं सतत जीता रहूँ, परन्तु अब मैं तेरे संरक्षण में जीना चाहता हूँ, मैं सतत जीता रहूँ, परन्तु अब मैं तेरे संरक्षण में जीना चाहता हूँ, तेरे सदृशन में जीना चाहता हूँ, तेरी देख-रेख में जीना चाहता हूँ, तेरी अध्यक्षता में जीना चाहता हूँ, तेरे नेतृत्व मे जीना चाहता हूँ, अर्थात् मैं चाहता हूँ कि मुझे सदा यह अनुभव होता रहे कि तू मुझे देख रहा है। हे जगदीश्वर ! मेरी एक-एक चेष्टा, मेरा एक-एक क्रियाकलाप, मेरी एक-एक वृत्ति-प्रवृत्ति, मेरा एक-एक मनन-चिन्तन यह सोचकर होता रहे, यह विचार कर होता रहे कि तू मुझे देख रहा है। भली भाँति देख रहा है, भीतर बाहर से देख रहा है। इसी का ही यह परिणाम होगा कि मैं समझ सकूँगा कि मेरी कोई भी ऐसी वृत्ति-प्रवृत्ति नहीं हो सकती जो कि मैं तुझ से छुपा सकूँ, कोई ऐसा क्रिया-कलाप नहीं हो सकता जो कि मैं तुझ से ओझल होकर कर सकूँ। प्रभुदेव! वास्तव में मेरे भीतर बाहर जो कुछ भी मेरे द्वारा हो रहा है तू उस सब को हस्तामलकवत् सदा देख रहा है। तेरा यह देखना सब प्रकार से मेरे हित में है कल्याण में है।

हे सर्वशक्तिमान् परमेश्वर ! तेरे सन्दर्शन में ही मैं निरन्तर जीता रहूँ। अर्थात् मुझे यह भली-भाँति विदित होता रहे, कि तू सम्यक् प्रकार से मुझे देख रहा है, तू पैनी दृष्टि से मुझे निहार रहा है।

प्रभुवर ! तेरे सन्दर्शन के कारण, तेरे साक्षी होने के कारण मुझे यह भी

भीतर से सदा बोध होता रहे कि तू इसलिये मेरी प्रत्येक चेष्टा को पैनी दृष्टि से देख रहा है कि तू जगत् का सम्राट् है, न्यायाधीश है और तुझ को सब के कर्मफली की व्यवस्था करनी होती है, सब के प्रति न्याय-व्यवस्था करनी होती है।

इस प्रकार तेरी कृपा से जब मुझे तेरी न्याय-व्यवस्था का बोध हो जायेगा अर्थात् मैं भली-भाँति समझ जाऊँगा कि जैसा मैं कर्म करूँगा, वैसा ही फल पाऊँगा तो फिर मैं तेरे वेदादेश के अनुसार तथा भीतर से तेरी प्रेरणा के अनुकूल कार्य करता हुआ सतत सुख पूर्वक जी सकूँगा।

हे भगवन्! मुझे सदा तू देखने वाला है, मुझे सदा तू भीतर-बाहर से जानने, वाला है, यह सत्य-यह तथ्य क्षण भर के लिए पल भर के लिए भी जब मेरी दृष्टि से ओझल हो जाता है तो तब मेरी सूझ-बूझ खो जाती है और फिर मेरे द्वारा वह सब कुछ होता है जो नहीं होना चाहिये, वह सब कुछ सोचा जाता है जो नहीं सोचा जाना चाहिए, वह सब देखा जाता है जो नहीं देखा जाना चाहिये, उस दृष्टि से देखा जाता है जिस दृष्टि से नहीं देखा जाना चाहिये, वह सब कुछ सुना जाता है जो नहीं सुना जाना चाहिए, वह सब कुछ बोला जाता है जो नहीं बोला जाना चाहिए, वह सब कुछ खाया-पीया जाता है जो खाया-पीया नहीं जाना चाहिए, उस पथ की ओर चला जाता है जिस पथ की ओर नहीं जाना चाहिए। तात्पर्य यह है कि मेरे द्वारा तब वह सब कुछ किया जाता है जो नहीं किया जाना चाहिए। इसलिए तो हे दृढतम जगदीश्वर ! मैं तुझ से प्रार्थना करता हूँ, अभ्यर्थना करता हूँ, विनय करता हूँ कि तू मुझे दृढ बना, सुदृढ बना, ऐसा कि फिर मैं निश्चल होकर तेरे सदृशन में, तेरी साक्षी में, तेरी देख-रेख में, तेरे नेतृत्व में सुदीर्घ काल तक जी सकूँ, चिरकाल तक जी सकूँ। अर्थात् अपने जीवन की प्रत्येक वृत्ति-प्रवृत्ति यह विचारकर कर सकूँ कि “देख रहा है मेरा नाथ, रहता है जो सदा साथ” बस यही तो प्रार्थना है हे परमेश्वर ! यही तो अभ्यर्थना है हे जगदीश्वर ! यही तो याचना है हे सर्वेश्वर ! स्वीकार करो और मेरा सर्वविध उद्धार करो।